वर्ष 24, अंक 12 Sr. 427, मुंबई, दिसम्बर 2025, पन्ने 52 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य एवं
उन्हीं के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

उपधान तप एवं तीर्थ यात्रा विशेषांक

263

-: संपादक एवं प्रकाशक :-
सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002.
M. 84 84 84 84 51 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

उपधान तप मोक्षमाला महोत्सव

चातुर्मास परिवर्तन दि. 5-11-2025

चढावा जाजम

पुस्तक विमोचन

चढावे

लाभार्थी बहुमान

उपधान तप मोक्षमाला महोत्सव

वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक दि. 19-11-2025

मोक्षमाला वरघोडा दि. 20-11-2025

मंदिरजी में महापूजा दि. 20-11-2025

उपधान तप मोक्षमाला महोत्सव

अनुज्ञा क्रिया दि. 21-11-2025

कामली अर्पण

तपस्वी बहुमान

लाभार्थी बहुमान

बहुमान

आशीर्वाद

बहुमान

मोक्षमाला अर्पण

उपस्थित जनमेदिनी

संपादक की कलम से...

उदयपुर की धन्यधरा पर, मरुधर रत्न, **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** की तारक निश्रा में आयोजित उपधान तप एवं उदयपुर से **दयालशा किल्ला के छ'री पालक संघ** की पूर्णाहूति के बाद **उपधान व संघ की स्मृतिरुप अर्हद् दिव्य संदेश मासिक का विशेषांक प्रकाशित** करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

पिछले **36 वर्षों से अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक का प्रकाशन हो रहा है । इस दरम्यान अनेक विशेषांक भी प्रकाशित हुए है । ठीक 34 वर्षों के बाद ईस्वी सन् 2025 में मरुधर रत्न, **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि 5 ठाणा का श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक जैन संघ-मालदास स्ट्रीट-उदयपुर में चातुर्मास हुआ ।

पूज्यश्री की सुमधुर वाणी एवं प्रेरणादायी प्रवचनों से संघ में अनेकविध आराधनाएँ संपन्न हुई ।

पूज्यश्री के सदुपदेश से दि. 2 अक्टूबर 2025 से महावीर विद्यालय में श्रावक जीवन की उत्कृष्ट आराधना स्वरुप महामंगलकारी उपधान तप का आयोजन निश्चित हुआ इस उपधान तप के आयोजन में भद्रंकर परिवार के गुरुभक्तों ने खूब उदारता से अपनी लक्ष्मी का सद्व्यय किया ।

दि. 21 नवंबर को 24 आराधकों की मोक्षमाला हुई । उसके साथ ही पर्वाधिराज महापर्व दरम्यान वार्षिक कर्त्तव्यों के वर्णन दरम्यान छ'री पालक संघ के लिए प्रेरणा की, जिसके परिणाम स्वरुप दि. 24 नवंबर से 29 नवंबर तक उदयपुर से दयालशा किल्ला छ'ह दिवसीय छ'री पालक संघ का आयोजन हुआ ।

दोनों ही भव्य कार्यक्रमों की कुछ झलकियों के साथ **अर्हद् दिव्य संदेश** का यह **विशेषांक प्रस्तुत** किया जा रहा है । आशा है कि पाठक गण को यह विशेषांक अत्यंत ही प्रेरणादायी बनेगा ।

श्री महावीर जैन विद्यालय, चित्रकूट नगर में महामंगलकारी उपधान तप

देव-वंदना

पल-पल मेरे हर रोम में, हर श्वास में प्रभु तुम रहो,
जीवन की अंतिम श्वास तक, मेरे हृदय में तुम रहो ।।
हे वासुपूज्य स्वामी ! मेरी, एक है बस याचना ।
कर दो दया अब ना पडे, संसार में और नाचना...।।

गुरु-वंदना

नमोऽस्तु प्रभु प्रेम सूरीश्वराय, नमो रामचन्द्राय वागीश्वराय,
नमः सद्गुरु श्रेष्ठ भद्रंकराय, नमस्तीर्थरूपाय संघाय नित्यम्

आशीर्वाद दाता

परम शासन प्रभावक,
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **मुक्तिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.,**
परम शासन प्रभावक,
पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **कीर्तियशसूरीश्वरजी म.सा.,**
प्रशांतमूर्ति पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **मनमोहनसूरीश्वरजी म.सा.**

उपधान तप निश्रादाता

मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, प्रवचन प्रभावक,
पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.,
पू. मुनिश्री **शालिभद्रविजयजी म.सा.,** पू. मुनिश्री **स्थूलभद्रविजयजी म.सा.,**
पू. मुनिश्री **विमलपुण्यविजयजी म.सा.,** पू. मुनिश्री **पुण्यबलविजयजी म.सा.**
मोक्ष माला प्रसंग पर प्रवचनकार पूज्य पंन्यास
श्री निरागरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा-3 भी पधारे थे ।

उपस्थित साध्वीवृंद

पूज्य सा. **श्री निर्मलेखाश्रीजी** की शिष्या, सरल स्वभावी
सा. श्री समर्पणलीनाश्रीजी म.सा., सा. श्री कृतपुण्याश्रीजी म.सा.,
सा. श्री सत्त्वपुण्याश्रीजी म.सा., सा. श्री लावण्यपुण्याश्रीजी म.सा.

प्रभु की कृपा, गुरु की अमी दृष्टि से हुआ उपधान तप,
आस्वाद संयम धर्म का करता सदा जीवन सफल ।
नश्वर सुखों का त्याग कर, शाश्वत सुखों की राह में,
मुक्ति प्रदायी मोक्ष की माला गुरुवर दो हमें ।।

महावीर जैन विद्यालय, चित्रकूट नगर उदयपुर में
आयोजित उपधान तप के लाभार्थी परिवार

-: मुख्य आधार स्तंभ :-

मातुश्री श्रीमती धाकुबेन एवं पिताश्री चुन्निलालजी रांका की स्मृति में
श्री खेताजी धन्नाजी परिवार • पुत्र-पुत्रवधु :- बख्तावरजी-सुलोचनाबाई,
जयंतिलालजी-चंद्रकलाबाई, केवलचंदजी-लीलाबाई, महावीरजी-उषाबाई,
पारसमलजी-लीलाबाई एवं समस्त रांका परिवार-दादाई, उदयपुर,मुंबई

-: रत्न स्तम्भ :-

- श्रीमती पंकुबाई भुरमलजी कोठारी बडगांव (राज.) निवासी हाल चेन्नई
- पिताश्री स्व. तेजसिंह मातुश्री उमरावबाई पुत्र-पुत्रवधु : जसवन्तसिंह-स्नेहलता पौत्र-पौत्रवधु : मयंक-नेहा • प्रपौत्र : अविराज एवं सुराणा परिवार-उदयपुर
- श्रीमती सोसरबाई शेषमलजी की स्मृति में श्री शांतिलाल, अशोक (गजानन), राकेश, निलेश, राहुल समस्त पोरवाल परिवार बेंगलोर, मुंबई-उदयपुर
- स्व. डॉ. मूलचंदजी प्रतापचंदजी रुपावत, श्रीमती कमलाबाई, डॉ. मूलचंदजी पुत्र-पुत्रवधु : राजेशजी-दिया, विपुलजी-नयना • पौत्र : प्रीत श्र पौत्री : रिती, दिया, खुशी कल्याण-मुंबई

-: स्वर्ण स्तम्भ :-

❆ अ.सौ. शकुंतलाबहन हस्तीमलजी कारसिया बेडा-मुंबई
❆ मोहिनीदेवी मगनलालजी ऋषभगोता कोठारी झिलवाडा-विक्रोली
❆ फेंसीबाई ताराचंदजी सोलंकी नोंवी भायंदर-ह.रमेशकुमार
❆ शा. दिलीपकुमारजी पुखराजजी राठोड पोमावा-कल्याण
❆ हेमलताबेन घेवरचंदजी निहालचंदजी राठोड-गोरेगांव (रानी स्टेशन. राज.)
❆ वक्तावरीबाई देवराजजी चौहान-ह.महेन्द्रभाई-बाली-बेंगलोर
❆ मातुश्री सुखीदेवी बालकचंदजी श्रीश्रीमाल कानाना-कोयम्बतूर
❆ गेरीबाई मुलचंदजी जयश्री-बसंतकुमार चौहान-लुणावा-भायंदर
❆ निर्मलादेवी अमृतलालजी मांडोत आहोर-मैसूर
❆ मातुश्री लीलाबाई मोहनलालजी कांठेड-घाणेराव-विलेपार्ले
❆ स्व.कमलाबाई फुटरमलजी बाफना (ह. सौ. विद्या बाफना) तलेगांव
❆ श्रीमती कान्ताबाई मगराजजी कंकुचोपडा जीवाणा-मलाड ❆ एक सद्गृहस्थ ❆ एक सद्गृहस्थ

❊ चन्द्राबेन भागचंदजी सोनिगरा-निगडी पूना
❊ धापूबाई चन्दनमलजी, राजकुमार, खुशीरामजी बोहरा हालावाला फालना, तीरपुर
❊ श्री कैलाशनगर जैन संघ-कैलाशनगर जि.सिरोही (राज.)
❊ शा. बाबुलालजी सोकलचंदजी बिबलेशा परमार कैलाशनगर (चैन्नई)
❊ शा. शंकरलालजी चुन्निलालजी गोयम गौत्र कैलाशनगर (चैन्नई)
❊ शा. अम्बालालजी बाबुलालजी बिबलेशा परमार कैलाशनगर (चैन्नई)
❊ शा. हुक्मीचंदजी ताराचंदजी कैलाशनगर-चैन्नई
❊ संघवी हिम्मतमलजी मियाचंदजी काश्यप-कैलाशनगर-चैन्नई
❊ संघवी पवनबाई देवीचंदजी कांकरिया दांतराई-चैन्नई (ह. किरणकुमार)
❊ भंवरलालजी हिराचंदजी कोठारी-वांकली-मुंबई
❊ संघवी परसनबाई हीराचंदजी जसराजजी कोठारी-बांकली (दीपक ज्योति)
❊ महेन्द्रकुमार शेषमलजी (रोहिडा-राज.)-बोरीवली
❊ सौभाग्य सुंदर परिवार सुमेरपुर-मुंबई
❊ श्रीमती चंद्राबेन नगराजजी छाजेड दुठारिया-बोरीवली
❊ श्रीमती दरियावबाई मिश्रीमलजी मण्डलेशा-मुण्डारा-जोगेश्वरी
❊ सुशीलाबेन कांतिलालजी साकलचंदजी तखतगढ़-भायखला
❊ शा. वनेचंदजी पनेचंदजी श्रीश्रीमाल परिवार सांचोडी-पूना
❊ चंद्राबेन-तेजसिंहजी, अमित-रिंकल, पूजा-राकेशजी कोठारी, उदयपुर-ताडदेव
❊ स्व. श्रीमती झंकारदेवी शंकरलालजी पुत्र : प्रतापजी सुनिताजी बापना-उदयपुर
❊ श्रीमती बसन्तदेवी ललितकुमारजी जारोली परिवार (आदेश्वरजी तीर्थ राजपुरा)
❊ अ.सौ. निलीमा-डॉ. भोपाल सिंघवी, डॉ. विसु-डॉ. नीलम, चारु कार्तिक मेहता-उदयपुर
❊ नरेन्द्रकुमार-स्नेहलता, गौरव-मिनल, अमिता-महेन्द्रजी, रिद्धि-क्यारा सिंघवी-उदयपुर
❊ जतनकुंवर स्व. गिरधारीसिंहजी, दिनेश-मंजुला, मुकेश, हार्दिक, विधि भण्डारी-उदयपुर
❊ अशोककुमारजी मनोहरलालजी बागरेचा राजनगर राजसमंद, मुंबई
❊ श्रीमती बदामीबाई हरकचंदजी सिरोया पोसालिया-कल्याण
❊ स्व. श्रीमती पेपीबाईजी अचलचंदजी परमार पोसालिया-लालबाग
❊ संघवी गजराबेन महेन्द्रकुमारजी मुथा पोसालिया-लालबाग
❊ संघवी मणीबाई मोहनलालजी परमार पोसालिया-पूना
❊ महेन्द्रकुमार त्रिलोकचंदजी परमार-पोसालिया-चैन्नई
❊ संघवी निरंजनकुमार ढुमावत पोसालिया-पूना
❊ स्व. लताबेन कांतिलालजी रायसोनी बीजोवा-वसई (ह. अमितजी जैन)
❊ पुष्पाबेन शांतिलालजी पालरेचा-भायखला-लखमावा

श्री महावीर जैन विद्यालय-चित्रकुट नगर भुवाणा उदयपुर

उपधान तप के तपस्वी गण

प्रथम उपधान तप आराधक

1) डॉ. भोपालसिंह मनोहरलालजी
2) मंजुबेन राजकुमारजी पोरवाल
3) अरविंदकुमारजी कन्हैयालाल चोपडा
4) मोहनसिंह लक्ष्मीलालजी पोरवाल
5) विद्या जीवनसिंहजी पोरवाल
6) अरुणाबेन गौतमजी मोर्डिया
7) गौतमजी भंवरलालजी मोर्डिया
8) श्यामाबेन राहुलजी सिंघवी
9) नीतुबेन राहुलजी सिंघवी
10) पुष्पाबेन नरेन्द्रजी हरकावत
11) किरणबेन भगवतीलालजी लिंघटवाडिया
12) स्नेहलता जसवंतसिंह सुराणा
13) पुष्पा करणचंदजी पोरवाल
14) निर्मलाबेन डुंगरसिंह कोठारी
15) राजेन्द्रजी करणपुरिया
16) नरेन्द्रजी करणपुरिया
17) राजकुमारजी लक्ष्मीलालजी बोलिया
18) ओमलता प्रविणजी जैन
19) शकुंतला नरेन्द्रजी कोठारी
20) विजयसिंह भूरालाल भाणावत
21) सुशीला विजयसिंह भाणावत
22) राजकुमारी मारु
23) गीताबेन ऋषभलालजी ओरडिया
24) राजमलजी झमकलालजी सहलोत

दुसरा उपधान तप आराधक

25) जीवनसिंह बसंतिलालजी कंठालिया-उदयपुर
26) जवेरचन्दजी पन्नालालजी पुनमिया-थाणा
27) धीरजकुमार वालचंदजी जैन-मुंबई
28) राजेन्द्रजी गोपीचंदजी सेठिया-कांकरोली
29) विमलचंदजी लालसिंह सोनिगरा-नाडोल
30) हंसा कान्तिलालजी जैन-अहमदाबाद
31) शान्ताबेन महेशजी बाबेल-उदयपुर
32) नीलमबेन मुकेशजी मेहता-भायंदर
33) मंजुला विद्यासागरजी बाठिया-सुमेरपुर
34) सरोजबेन प्रकाशजी छाजेड-भोपाल सागर

तीसरा उपधान तप आराधक

35) कुन्दनमलजी पुखराजजी परमार-सेवाडी
36) राजेन्द्रकुमार मीठालालजी तलेसरा-उदयपुर
37) तेजराजजी वालचंदजी बोकरिया-खीमेल
38) नगीनाबेन नेमीचंदजी सुराणा-बोरीवली
39) संतोषबेन सुरेशचन्द्रजी करणपुरिया-उदयपुर
40) शकुंतला मगराजजी कबदी-सुमेरपुर
41) चन्द्राबेन गजराजजी मेहता-सुमेरपुर
42) बसंतिबेन शांतिलालजी मेहता-देलवाडा
43) शान्ताबेन पारसजी नागौरी-उदयपुर
44) मायाबेन बाहुबलीजी पोरवाल-उदयपुर
45) जसवंतदेवी परमेश्वरलालजी गोरवाडा-बेंगलोर
46) प्रेमलताबेन वीरचंदजी मेहता-उदयपुर

अठारिया उपधान तप आराधक

47) यथार्थ आशीषजी हुम्मड-उदयपुर
48) सुरेशजी लक्ष्मीचंदजी परमार-सुरत
49) पारसमलजी मांगीलालजी जैन-आसाहोली
50) प्रदीपजी रोशनलालजी माण्डावत-उदयपुर
51) कुसुमलता प्रतापसिंह सिंघवी-उदयपुर
52) हिरल विराजजी जैन-पुणे
53) पुष्पाबेन मेहता-उदयपुर
54) सुनीला महेशजी कोठारी-उदयपुर
55) ललिता नवकारसिंह रांका-उदयपुर
56) चंदनबाला तेजसिंह मेहता-उदयपुर
57) अरिहा अनिलजी जैन-उदयपुर
58) सुशीला कालुलालजी जैन-कानोड
59) स्वरुपबेन उत्तमचंदजी सिंघवी-उदयपुर

रत्न संदेश

लेखक :-

प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

519 सच्चा सुख

इन्द्रियों के अनुकूल विषयों का सेवन शरीर को सुख देता है, परन्तु वह सुख आत्मा के लिए भावी दु:ख को ही आमंत्रण है । आत्मा का सच्चा सुख इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त नहीं होता है, सच्चा सुख आत्मा में रहा हुआ है जो आत्म-स्वरुप के चिंतन-मनन से ही प्राप्त हो सकता है । दैहिक सुख के त्याग बिना आत्मिक-सुख को पाने की कल्पना मृगमरीचिका ही है ।

520 मोह का नाश

शराब के नशे में चकचूर व्यक्ति को सत्य का भान नहीं होता है, वह कल्पना की दुनिया में ही खोया रहता है । शराब से भी भयंकर मोह का नशा है । इस नशे में चकचूर व्यक्ति को आत्मा के स्वरुप का लेश भी भान नहीं होता है । मोहांध आत्मा, आत्मा में नहीं, बल्कि देह में सुख की शोध करती है । परिणाम स्वरुप वह दु:ख के ही गर्त में डूबती है ।

जनवरी 2025 से दिसंबर 2025 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **अ.सौ. सायरबाई बसंतीलालजी हस्तीमलजी चोपडा**-बाली-निगडी
- **एक सद्गृहस्थ**-कांदिवली-बाली

सहयोगी

- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई)** बाली, ईरोड़
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी** की प्रेरणा से **अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता** मुंडारा-भायंदर
- **स्व. मातुश्री रतनबाई जिन्नालालजी** फागणिया-लुणावा

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी** म.सा.
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)
विहार में संपर्क सूत्र : सहदेव 98672 04942

सार ग्रहण-करो

वैराग्य दीप हृदय प्रदीप

लेखांक-32

विवेचनकार :– **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

नवोदित लेखक :– **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

श्लोको वरं परमतत्त्व-पथ-प्रकाशी, न ग्रन्थकोटिपठनं जनरञ्जनाय ।
सञ्जीवनीति वरमौषधमेकमेव, व्यर्थश्रमप्रजननो न तु मूलभारः ।।32।।

शब्दार्थ

श्लोको=एक गाथा, **वरं**=श्रेष्ठ है, **परमतत्त्वपथप्रकाशी**=मोक्ष मार्ग को बतानेवाली, **न**=नहीं है, **ग्रन्थकोटिपठनं**=करोडों ग्रन्थों का पठन, **जनरञ्जनाय**=लोगों को खुश करने के लिए, **सञ्जीवनी**=सर्व रोग नाशक और जीवन प्रदायी औषधी विशेष, **इति**=इस प्रकार, **वरं**=श्रेष्ठ है, **औषध**=रसायण विशेष, **एकं**=अद्वितीय, **एव**=ही, **व्यर्थश्रमप्रजनन**=निरर्थक थकाने वाला प्रयत्न, **तु**=वितर्क अर्थ में, **मूलभार**=औषधियों की जडों का भार ।

गाथार्थ

सर्व रोग नाशक और दीर्घ जीवन प्रदायी एक मात्र संञ्जीवनी औषधि की प्राप्ति करना अच्छा है परंतु सभी औषधियों के जडों का भार पाने के लिए निरर्थक श्रम करना, अच्छा नहीं है । इसी प्रकार मोक्ष मार्ग को बताने वाली एक गाथा का पठन-चिन्तन और मनन करना अच्छा है परंतु मात्र दुनिया को खुश करने के लिए करोडों ग्रंथों का शुष्क-पठन अच्छा नहीं है ।

विवेचन

खडी शक्कर का टूकडा और संगमरमर का छोटा टूकडा-दोनों बाहर से तो एक समान ही दिखते है परंतु दोनों के स्वरुप में फर्क है । इनकी परीक्षा तो पानी में डालने से होती है । पानी में डालने के बाद शक्कर का टुकडा पानी में घुलमिल जाता है और पानी को मीठा बना देता है, जबकि संगमरमर का छोटा टुकडा पानी में जाने के बाद हमेंशा वैसा ही रहता है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता । बाहर निकालने के बाद वह पत्थर के टुकडे को सुखे कपड़े से पोछने पर वह सुखा ही रहता है ।

ग्रंथकारश्री इस श्लोक में मात्र ज्ञानाभ्यास पर भार न देते हुए उसके पीछे के लक्ष्य की शुद्धि का महत्त्व समझा रहे है । वे कह रहे है कि दुनिया को खुश करने के लिए, अपनी विद्वत्ता बताने के लिए अथवा यश कीर्ति के लिए कोई व्यक्ति करोडों श्लोको का अभ्यास करे तो वह उसका ज्ञानाभ्यास पानी में पडे पत्थर पत्थर के टुकडे के समान विशेष लाभदायी नहीं है । उसकी आत्मा को ऐसे ज्ञानाभ्यास से कोई फायदा नहीं होता । ऐसा ज्ञानाभ्यास तो मात्र भारढोने वाला ही होता है । जैसे गधे की पीठ पर चन्दन की लकडी का भार, मात्र भार स्वरुप ही रहता है । गधे को उसकी सुगंध या शीतलता का कोई लाभ नहीं होता है ।

लोक रंजन के लिए किया गया ज्ञानाभ्यास भी आत्महितकारी नहीं है, अत: ज्ञानाभ्यास करते समय लोकरंजन के भाव का त्याग कर उसे आत्महितकारी बनाने का प्रयत्न जरुरी है । आत्मा के भीतर मोक्ष सुख के प्रति संवेग भाव एवं संसार सुख के प्रति निर्वेद भाव पैदा करे ऐसे हजारों ग्रंथ नहीं, हजारों श्लोक नहीं बल्कि मात्र एक श्लोक का पठन, उसका चिंतन-मनन और उसकी अनुप्रेक्षा करना ज्यादा अच्छा है । वह एक श्लोक का पठन साधकात्मा के लिए पानी में डाले गए खडी शक्कर के टूकडे की तरह होता है, जो उसमें घुलमिलकर मीठा स्वाद और ठंडक प्रदान करता है ।

Economics का भी सूत्र है सर्वश्रेष्ठ व्यापार वही है, जिसमें Minimum Efforts and Maximum Profit हो । ट्रक भरकर रेती-पत्थर के व्यापार से भी ज्यादा मुनाफा एक छोटे से रत्न के व्यापार से हो जाता है । इसमें Quantity से भी Quality की कीमत देखी जाती है । सिर्फ Quantity हो परंतु Quality अच्छी न हो, नकली हो तो उसकी कोई कीमत नहीं होती है ।

वर्तमान में जो पृथ्वी हमारे लिए दृष्टिगोचर है, उसमें प्राय 70% क्षेत्र में चार महासमुद्र है, शेष धरती है । धरती पर भी कई खाडियाँ, नदी-नाले ऐसे है जिसमें भरा हुआ पानी पीने लायक नहीं है । पीने लायक मीठा पानी का प्रमाण समुद्र के पानी की अपेक्षा कम है । इसीलिए दुनिया में भी कहावत है **खारा जल से दरियों म्होटो मीठा जल रो लोटो ।** इसी तरह लोक रंजन के लिए पढे गए करोडों ग्रंथों की अपेक्षा आत्मा के लिए एकांत हितकारी एक श्लोक भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है ।

वैसे तो सभी शास्त्र श्रुतज्ञान स्वरुप है, फिर भी श्रमण सूत्र में 29 प्रकार के शास्त्रों को पापश्रुत के रुप में कहा गया है । 29 पापश्रुत–

1) भौम शास्त्र– जिन शास्त्रों में भूमिकम्प, भूगर्भ में खनिज पदार्थ, भूमि में पानी का प्रमाण आदि विषय को जानने का निर्देश किया गया हो वे भौम शास्त्र कहलाते है ।

2) उत्पात शास्त्र– जिन शास्त्रों में आकाश में से रुधिरवृष्टि, दिग्दाह इत्यादि विषयों का निर्देश किया गया हो वे उत्पात शास्त्र कहलाते है ।

3) स्वप्न शास्त्र– जिन शास्त्रों में व्यक्ति को अर्धजागृत अवस्था में आने वाले स्वप्न के अच्छे-बूरे फल, किस समय में आये हुए स्वप्न का कैसा और कितने काल में फल प्राप्त होता है उस विषय का निर्देश किया गया हो वे स्वप्न शास्त्र कहलाते है ।

4) अन्तरिक्ष शास्त्र–जिन शास्त्रों में अन्तरिक्ष में रहे चर-अचर ग्रह-नक्षत्र आदि की गति, उसके अनुसार राशि फल में परिवर्तन आदि के विषय में निर्देश किया गया हो वे अन्तरिक्ष शास्त्र कहलाते है ।

5) अंग शास्त्र–जिन शास्त्रों में शरीर के विविध अंगों में स्फुरन और कंपन से होने वाले शुभाशुभ फल के विषय में निर्देश किया हो वे अंग शास्त्र कहलाते है ।

6) स्वर शास्त्र– जिन शास्त्रों में पशु-पक्षियों और मनुष्य के विविध स्वरों के विषय में निर्देश हो, वे स्वरशास्त्र कहलाते है ।

7) व्यंजन शास्त्र– जिन शास्त्रों में शरीर पर रहे तिल, मसा आदि चिह्नों के शुभाशुभ फल के विषय में निर्देश किया हो वे व्यंजनशास्त्र कहलाते है ।

8) लक्षण शास्त्र– जिन शास्त्रों में विविध वस्तुओं में रहे शुभाशुभ लक्षण के विषय में निर्देश हो, वे लक्षण शास्त्र कहलाते है ।

9 से 24) इन आठ शास्त्रों के **मूल सूत्र, वृत्ति और वार्तिक** के भेद से 24 शास्त्र हो जाते है ।

25) विकथानुयोग– आत्महित के विरुद्ध कथाओं को विकथा कहते है । इसके चार प्रकार है–

i) स्त्रीकथा– स्त्रियों के रुप, लावण्य, हास्य, सौंदर्य, वस्त्र, आभूषण आदि विकार पैदा करने वाली चर्चा को स्त्रीकथा कहते है ।

ii) भक्तकथा– भोजन के छह रस, खाने-पीने की वस्तुओं के विषय में चर्चा को भक्तकथा कहते है ।

iii) देशकथा– देश-विदेश के विविध रीति-रिवाज, सभ्यता, वेशभूषा, भोजन आदि के विषय में चर्चा को देशकथा कहते है ।

iv) राजकथा– देश के राजा, प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति, शासक वर्ग की सेना, अंत:पुर परिवार, युद्धकल, भोग-विलास आदि संबंधी चर्चा को राजकथा कहते है ।

इन चार विकथाओं का वर्णन जिन शास्त्र में किया गया हो वे विकथानुयोग शास्त्र कहलाते है ।

26) विद्यानुयोग– जिन शास्त्रों में रोहिणी आदि 16 विद्याओं की सिद्धि हेतु विधि-विधान के प्रयोगों का निर्देश किया हो वे विद्यानुयोग शास्त्र कहलाते है ।

27) मंत्रानुयोग– जिन शास्त्रों में धन प्राप्ति, वशीकरण, रोगनिवारक आदि विविध प्रकार के मंत्रों का निर्देश किया हो वे मंत्रानुयोग शास्त्र कहलाते हैं ।

28) योगानुयोग–जिन शास्त्रों में हठ योग आदि योग अथवा अष्टांग योग आदि का निर्देश किया हो वे योगानुयोग शास्त्र कहलाते है ।

29) अन्यतीर्थिकानुयोग– जिन शास्त्रों में अन्य तीर्थिक के हिंसा प्रधान आचार, उनकी मान्यताओं में बताए चमत्कारादि का निर्देश किया हो वे अन्यतीर्थिकानुयोग शास्त्र कहलाते है ।

इन सारे शास्त्रों का पठन मुख्य रुप से पापकारी प्रवृत्ति बढाते हुए साधक को मोक्षमार्ग से

भटकाने वाला होता है । इसलिए ग्रंथकारश्री इन सभी को वनस्पति के मूल भार को इकट्ठे करने के समान परिश्रम जन्य बताते है । जब मोक्षलक्षी जिनागम शास्त्र रूपी संज्ञीवनी औषधी प्राप्त हो गई है तब निरर्थक पाप को बढानेवाले इन पापश्रुत का कोई अर्थ नहीं है । प्राप्त हुआ मनुष्यायुष्य खुब थोडा है । उसमें अपना क्षयोपशम और भी कम है । अत: यदि व्यर्थ के इन पापश्रुत के पठन में जीवन का महत्त्वपूर्ण काल व्यर्थ चला गया तो आत्मसाधना के लिए समय कहाँ मिलेगा ?

जिनागम का एक-एक श्लोक खूब रहस्यों से भरा है । भूतकाल में ऐसे कई प्रसंग बने है जिनमें मात्र एक श्लोक अथवा अल्प उपदेश से उन्मार्ग में गई हुई आत्माएँ पुन: सन्मार्ग में स्थिर होकर आत्मसाधना की ऊँची भूमिका तक पहुँची है ।

◆ 1444 ग्रंथ के रचयिता **पू.आ.श्री हरिभद्रसूरीश्वरजी म.सा.–**गृहस्थ जीवन में वे राजपुरोहित थे । उन्हें अपने ज्ञानाभ्यास का खुब अभिमान था । साथ ही जैनधर्म पर कट्टर द्वेष था । हाथी के पैर के नीचे कुचलाकर मर जाना कबूल है परंतु प्राण बचाने के लिए भी जैन मंदिर में नहीं जाना, ऐसी प्रतिज्ञा होने पर भी **''जो बात मैं नहीं जानता हूँ, वह कोई मुझे सीखा दे तो मैं उसका शिष्य बन जाऊं''** इस प्रतिज्ञा के कारण उनके जीवन में एक बडा मोड आ गया । याकिनी महत्तरा साध्वीजी जिनागम की गाथा का पुनरावर्तन कर रही थी तब वे शब्द उन्हें समझ में नहीं आये । जिज्ञासा वृत्ति से जब पूछने गए तब साध्वीजी ने आचार्य भगवंत के पास भेजा । आचार्य भगवंत ने उस गाथा के अर्थ को समझने के लिए दीक्षा स्वीकार करने का निर्देश किया । एक समय के कट्टर द्वेषी ने मात्र एक श्लोक का अर्थ समझने के लिए दीक्षा स्वीकार की और आगे चलकर जैन धर्म के धुरंधर आचार्य बने ।

◆ उपमिति भव प्रपंच कथा के रचयिता **सिद्धर्षि गणी–**गृहस्थ अवस्था जब उन्हें जुएं का व्यसन था, तब रात को देरी से घर आने पर माता ने कहा था-**'जहाँ दरवाजा खूला हो, वहाँ चला जा ।'** इन वचन से उन्हें सद्‌गुरु का योग हुआ और दीक्षा प्राप्त हुई ।

आगे चलकर जब बौद्ध दर्शन का अभ्यास करने के बाद उनका मन बौद्ध दर्शन स्वीकार करने के लिए तैयार हो गया था तब गुरुदेव की पाट पर पडे **ललितविस्तरा ग्रंथ** के कुछ पन्ने पढकर वे पुन: सद्धर्म में स्थिर बन गए । 21 बार जाने-आने पर गुरु मुख के उपदेश से जो बात न समझ सके, वह बात कुछ श्लोक के पठन से समझ गए ।

निकट मोक्षगामी आत्माएँ ऐसी होती है जो अल्प शब्दों में दिये गए उपदेश का सार ग्रहण कर आत्मकल्याण के मार्ग में आगे बढ जाती है । परंतु जो अभव्य है अथवा दुर्भव्य है, जिनको दीर्घ काल तक संसार में परिभ्रमण करना है वे जिनागमों को पाकर भी अपने संसार की वृद्धि ही करते हैं । अभव्य आत्माएँ नौ पूर्व तक विशाल ज्ञान प्राप्त कर सकती है, परंतु मोक्ष के विषय में अश्रद्धा के कारण कठोर संयम पालन करने पर भी उनका मोक्ष नहीं हो सकता हैं । दुर्भव्य आत्माएँ अथवा जो मोह गर्भित वैराग्य वाले होते है वे शास्त्राभ्यास तो खुब करते है परंतु आत्महितकारी ज्ञान से वंचित रह जाते है ।

अब निर्णय हमे करना है कि हमे सञ्जीवनी औषध स्वरुप आत्महितकारी श्लोकों का आश्रय लेना है कि वनस्पतियों के मूल भार को वहन करने स्वरूप लोकरंजनकारी करोडो श्लोकों का आश्रय करना है ।

श्री महावीर जैन विद्यालय

भुवाना उदयपुर (राज.) हुए उपधान आराधकों के अभिप्राय

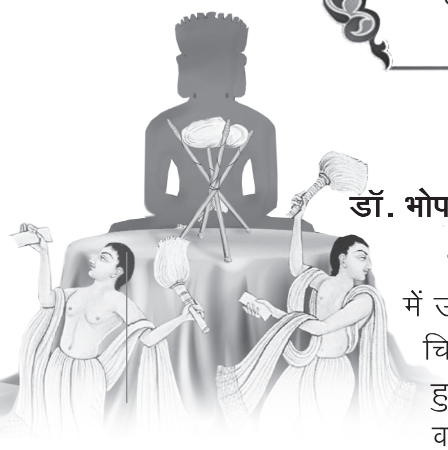

उपधान तप निर्विघ्नतया पूर्ण हुआ

डॉ. भोपालसिंह एस. सिंघवी, M.Tec Gold Medalist, PHd. **उदयपुर (प्रथम उपधान)**

पू.पू. आचार्य भगवन्त श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में उपधान तप का आयोजन 2 अक्टूबर 2025 से श्री महावीर जैन विद्यालय, चित्रकुट नगर, उदयपुर में प्रारम्भ हुआ। मुझे उपधान तप का अद्भुत अनुभव हुआ। हमारी पूरी उपधान तप की यात्रा बहुत ही अच्छी रही। मूलनायक श्री वासुपूज्य भगवान की बहुत ही सुन्दर नयन दर्शी व ह्रदय स्पर्शी प्रतिमा है साथ ही श्री चन्द्रप्रभ स्वामी व श्री कुन्थुनाथ भगवान व अन्य देवी-देवताओं की सुन्दर प्रतिमा है।

आचार्य भगवन्त का क्या कहना ? उनकी बहुत ही सुन्दर व्याख्यान शैली, ज्ञानवर्धक बातें, उनका मुस्कुराता चेहरा, उत्कृष्ट लेवल का व्याख्यान, एक-एक व्यक्ति पर ध्यान एवं हर वक्त नए-नए साहित्य के सर्जन में व्यस्त रहनेवाले आचार्य भगवंत का व्यक्तित्व बहुत ही अद्भुत है। **मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** ने हमे खमासमण दिलाये। उन्होंने महान ऋषिमण्डल स्तोत्र का पाठ करवाया एवं कहानियाँ के माध्यम से रोचक ज्ञान दिया व सदा मदद में तत्पर रहे। **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** की अद्भुत प्रवचन शैली रही। ह्रदय को स्पर्श करनेवाली कई ज्ञान की बातें बतायी। बारह व्रत सम्बन्धी Detail में वर्णन किया व बहुत सूक्ष्मता से उन बिन्दुओं को छुआ। **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म.सा.** हर वक्त उत्साहित दिखे। वे बहुत सरलमना व विलक्षण प्रतिमा के धनी है। **मुनिश्री पुण्यबलविजयजी म.सा.** एकदम मृदु, सरल स्वभावी एवं हरवक्त स्वाध्याय में लीन रहते।

हम यहां हर वक्त स्वाध्याय, काउसग्ग, क्रिया, माला इत्यादि में व्यस्त रहे। यह एक यादगार उपधान रहा, जिसकी जीवन भर याद आयेगी। यहाँ भोजन, रहने व स्थण्डिल की व्यवस्थाएं भी अच्छी रही। हमारा उपधान निर्विघ्न व आसानी से पुरा हुआ। यहाँ ललितजी ने मेडिकल व अन्य व्यवस्थाओं का पुरा ध्यान रखा। सहदेव भैया और राहुल भैया ने हर तरह से बहुत सहयोग दिया।

हम जीवन पर्यंत आभारी रहेंगे

विजयसिंह भाणावत, M.A. Rtd. A.AO. **(उदयपुर)**

डॉ. सुशीला भाणावत, M.A., M.Ed. PHD. **(उदयपुर) (प्रथम उपधान)**

प्रथम उपधान तप दिनांक 2-10-2025 से 21-11-2025 तक मरुधर रत्न **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि की शुभ निश्रा में **श्री महावीर जैन विद्यालय, चित्रकुट नगर, भुवाना उदयपुर** के प्रांगण में **भद्रंकर परिवार** एवं **उपधान तप समिति** के द्वारा आयोजित प्रथम उपधान तप की आराधना करने का हमें परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मैं विजयसिंह भाणावत पिता भूरालालजी वैद्य, उम्र 60 वर्ष (रो.नि. राजकीय सेवा) एवं पत्नी श्रीमती सुशीला भाणावात (उम्र 65 वर्ष) (सेवा-निवृत्त व्याख्याता) ने (सजोडे) प्रथम उपधान तप की आराधना की, हमने जो पाया, उससे जो जीवन परिवर्तन हुआ, एवं जो प्रतिज्ञाएं ग्रहण की उसको संक्षिप्त में अंकित किया हैं–

–आचार्य भगवंत के तत्वज्ञान भरे प्रवचनों से हमारे गृहस्थ जीवन में हो रही गल्तियों का एहसास हुआ और इन गल्तियों को भविष्य में पुनरावृत्ति न हो, आत्मा को निर्मल बनाने का प्रयास करेंगे एवं अगले भव में संयम जीवन अंगीकार करने की पूर्ण भावना रखते है ।

–हमारे जीवन में जो हम पाप नहीं करते है, फिर भी प्रतिज्ञा के अभाव में उसका दोष हमें लगता है इसलिये मर्यादा ग्रहण की ।

–आचार्य भगवंत ने अपने प्रवचन में दान, शील और त्याग की महिमा को अनेक उदाहरणों से सरल भाषा में उद्‌बोधन देकर जिनवाणी का अमृतपान कराया, इसको हम हमारे शेष जीवन में तन, मन और धन के योगदान पूर्वक अपनाने का प्रयास करेंगे ।

–पू. मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. प्रतिदिन 100 खमासमण एवं अनेक कहानियों के माध्यम से हमारे जीवन परिवर्तन करने का संदेश देते थे ।

–पू. मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. प्रतिदिन श्रावक जीवन के 12 व्रत, गृहस्थ जीवन के पापों से बचने एवं जीवन में उतारने / मर्यादा करने के लिए विभिन्न उदाहरण दिये । सटीक धर्म के मर्म को गहराई से समझा कर आत्मा को निर्मल करने का पुरजोर संदेश दिया ।

हमने इस आराधना से अपना सच्चा घर-यानि **मोक्ष का मार्ग** प्रशस्त किया तथा 47 दिवसीय बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न हुए । साथ ही दिनचर्या की सम्पूर्ण क्रिया निश्चित समय पर अनुशासित ढंग से सम्पन्न हुई । व्यवस्था की दृष्टि से सम्पूर्ण व्यवस्था समुचित थी ।

पुनश्च गुरु भगवंत ने हम पर महती कृपा कर जिनशासन का, श्रावक जीवन का एवं नवकार महामंत्र का लाइसेंस स्वरुप हमारी Credit पर प्रभु के समक्ष **''मोक्ष माला''** प्रदान की है उसके लिए हम जीवन पर्यन्त आभारी रहेंगे । तथा शेष II & III उपधान तप 35 एवं 28 दिवसीय भी शीघ्र करने की भावना रखते हैं ।

आत्मा पर बहुत बडा उपकार किया

राजकुमार बोल्या, (उदयपुर) (प्रथम उपधान)

चातुर्मास में नित्य प्रवचन में जाने से आत्मा को निर्मल बनाने एवं किये हुये पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए उपधान करने की भावना जागृत हुई । **आचार्य गुरुदेव के सरल स्वभाव एवं ज्ञान के अतुल भंडार होने का परिचय उपधान में जुडने के बाद हुआ ।** उपधान दरम्यान भवोभव में किये पापों का जो भार आत्मा के साथ जुडा हुआ था, उसको रिक्त करने जो क्रिया गुरुदेव ने कराई उससे मेरे मन व आत्मा पर जो बोझ था, वह कम हुआ ।

◆ श्रावक के बारह व्रत नियमों की विस्तृत जानकारी देकर गुरुदेव ने हमारे पर बहुत बड़ा उपकार किया । हमने नियम लेकर कुछ सीमा निश्चित की, तो कुछ पर पुरी तरह से रोक लगाकर अन्जाने में होनेवाले पाप के बन्ध से मुक्ति प्राप्त की ।

◆ एकेन्द्रीय जीव एवं पंचेन्द्रिय जीव (पूर्ण विकसित) की होनेवाली हिंसा में जो पाप का बन्ध होता है उसकी मात्रा में जो बहुत बडा फर्क होता है, वह जानने मिला । प्रभु को जो पुष्प चढाते है उस समय हमारे जो उच्च भाव होते है उससे पाप का बंध नहीं होता है, यह बोध स्पष्ट हुआ ।

''धन संग्रह से तो लौकिक सुख प्राप्त होता है परन्तु धन के त्याग से शाश्वत सुख प्राप्त होता है । त्याग के पुण्य का फल अगले भव में हमारे साथ आता है ।'' ऐसे विचारों को सुनकर ऐसा लगता है कि–परिवार के प्रति हमारी जो जिम्मेदारी है उसको निभाना तो है परन्तु पूर्ण रुप से केवल उसीमें डुबना नहीं है बल्कि अपने अगले भव में अच्छी गति मिले उसके लिए धर्म एवं प्रभु के बताये हुए रास्ते पर लक्ष्मी का सदुपयोग करना चाहिये ।

'शरीर व आत्मा दोनों अलग है' यह सत्य प्रवचन से ही समझ में आया । हम शरीर की बहुत चिन्ता करते है, परन्तु आत्मा की कभी चिन्ता नहीं की । रोज दिनभर में जाने अन्जाने में इतने पाप करते है जिससे आत्मा अन्दर ही अन्दर दुःखी होती है एवं अगले भव में निश्चित रुप से नरक की प्राप्ति करती है । गुरुदेव ने इन पापों से बचने के लिए छोटे छोटे नियम बताकर हमारी आत्मा पर बहुत बडा उपकार किया है ।

अब ऐसा लगने लगा है कि **''संसार के जिस जीवन को हम जी रहे है, उसमें दुःख के अलावा कुछ नहीं है । पुण्य से हम सुख भोगते है, आगे चलकर उसी से हमें दुःख मिलता एवं पाप का बन्ध हो जाता है ।''**

पू. मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. ने खमासमण के समय कहानी के द्वारा, उसके सार में जो तत्वज्ञान फरमाया, उससे हमको धर्म का मार्मिक ज्ञान आचरण में उतारने में सरलता हुई तथा प्रभु की वाणी में पूर्ण श्रद्धा जागृत हुई ।

पू.मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. ने श्रावक धर्म को अति गहराई से समझाया । उपधान से जाने के बाद उन व्रतों को गृहस्थ जीवन में पूर्ण रुप से पालने की कोशिश करुंगा । इससे मेरी आत्मा को होनेवाले बहुत से पापों से मुक्ति मिलेगी ।

यहां उपधान से जाने के बाद मैं प्रभु व गुरु के बताये हुए मार्ग पर ज्यादा से ज्यादा चलने की कोशिश करुंगा, गुरुदेव से यही वादा करता हूँ ।

''गुरु की महिमा कोई न जाने, ज्ञान की गंगा नितबहाते, गुरु तो है एक बहती धारा
भटके हुए राही को, धर्म के मार्ग पर चलना सिखाते, ऐसे गुरु को वंदन हमारा''

जीवन का सही अर्थ समझ मे आया

जीवनसिंहजी कंठालिया (उदयपुर) (द्वितीय उपधान)

उपधान तप यानी विशेष संयम में रहकर सांसारिक आत्मा के मोह को छोडकर साधु जीवन जैसा जीना व तप आराधना करनी । उपधान में प्रवेश के बाद एक दो दिन क्रिया समझने में थोडी दिक्कत हुई, लेकिन बाद में सब कुछ अनुकुल हो गया । तप आराधना करने में कभी कोई दिक्कत नहीं आयी ।

पहला उपधान तप करेडा पार्श्वनाथजी-भोपालसागर में किया था । दूसरे उपधान हेतु मेरे पास तीन विकल्प थे– 1) पालीताणा 2) वही पार्श्वनाथजी मन्दसौर 3) उदयपुर । इस तीन स्थानों में से मैंने उदयपुर को चूना । मेरे मन में थोड़ी शंका भी थी कि उदयपुर में इतनी व्यवस्था हो पायेगी या नहीं, लेकिन उपधान में प्रवेश के बाद ही दूसरे दिन मुझे लगा कि यह स्थान तो अति उत्तम है । यहां पर किसी प्रकार की तकलीफ नहीं हुई । आचार्य प्रवर एवं साधु-साध्वीजी शांत एवं सरल स्वभावी है । आचार्य प्रवर एवं सभी साधु भगवंतों

ने हमारे सभी उपधान तप आराधकों का दिल जीत लिया । आचार्य भगवंत के प्रवचन बहुत ही अच्छे लगे । वे हमें व्यर्थ की सांसारिक गतिविधिओं को छोडकर धार्मिक प्रवृत्तियों को बहुत ही बारीकी से समझाते हुए धर्म आराधना की ओर जोडने का पूरा प्रयास करते थे । प्रवचन से जीवन का यही सार समझ में आया कि संसार में रहकर सांसारिक क्रिया के साथ में धर्म, त्याग, तपस्या की क्रिया अच्छी तरह से कर सके । क्योंकि जिंदगी की असली कमाई धर्म ही है । अगले भव में वहीं काम में आयेगी ।

आचार्य भगवंत, साधु वृन्द एवं साध्वी वृन्द से कभी कोई धार्मिक चर्चा करने जाते या प्रश्न पूछते तो बहुत सरलता से समझाते है । यहां पर सभी उपधान तप के तपस्वियों का व्यवहार बहुत ही सीधा व सरल था । कभी कोई शिकायत का काम ही नहीं पडा । श्री संघ ने भी जो स्थंडिल व भोजन की व्यवस्था की वह सराहनीय रही ।

इस उपधान तप से मुझे सीखने को मिला सांसारिक मोहमाया को कम करके तप व त्याग की जिंदगी, शांति देती है । मानव जीवन का यही सार है । संसार में रहकर तप-त्याग को भी जिंदगी में पूरा महत्व देना चाहिये । सभी से मेरा यही निवेदन है कि जिंदगी में एक उपधान तप, **आचार्य प्रवर श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** की निश्रा में जरुर करना चाहिये । इससे उपधान तप का महत्व व जिंदगी का सार समझ में आ जायेगा ।

उपधान तप में आपकी त्याग तपस्या तो होगी ही इसके साथ आपके शरीर एवं स्वास्थ्य पर भी काफी अनुकूलता महसुस होगी । इससे शरीर की काफी बीमारियाँ भी दूर होने की पूरी पूरी सम्भावना रहती है । अन्त में उपधान तप का यही महत्व एवं सार है कि सांसारिक जीवन में रहकर भी इस तप से काफी त्याग, तपस्या व धार्मिक क्रिया का लाभ ले सकते है, मानव जीवन का सही अर्थ समझ में आयेगा, इस तप को पूरा करने के बाद जीवन में तप, त्याग व तपस्या करने की बराबर भावना रखता हूँ ।

जो असंभव था, वह संभव हो गया

अरविन्दकुमारजी चोपडा M.Sc. M.Ed.(प्रथम उपधान)

इस वर्ष 2025 में परम **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज** के शिष्य रत्न बीसवीं सदी के महान योगी, नवकार-विशेषज्ञ **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के चरम शिष्य मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव परम पूज्य **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का चातुर्मास आराधना भवन मालदास सेहरी, उदयपुर में हुआ ।

चातुर्मास के दौरान **आचार्य भगवंत श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** व साधु भगवंत के प्रवचन पहली बार श्रवण करने का लाभ मिला । अभी तक जीवन में अकादमिक ज्ञान ही था । धार्मिक ज्ञान बहुत अल्प था, परन्तु आचार्य भगवंत के प्रवचनों को श्रवण करने से धर्म के प्रति जिज्ञासा का भाव उत्पन्न हुआ । आचार्य भगवंत के सरल स्वभाव एवं मधुर वाणी व उच्चस्तरीय ज्ञान ने मेरे जीवन को एक नई दिशा प्रदान की । प्रवचन के दौरान जाना कि ज्ञान आत्मा का मौलिक गुण है । जीवन में जैसे-जैसे ज्ञानाचार का पालन करते है, वैसे-वैसे आत्मा में रहा, यह गुण प्रकट होता है । गुरु भगवंत के प्रवचन सरल भाषा में प्रेरणादायक होते

जिससे आत्मा का कल्याण हो । साधारण जन मानस भी ऐसे प्रवचन शीघ्र समझ सके और अपनी आत्मा का कल्याण कर सके ।

मैंने जीवन में कभी नहीं सोचा था कि मैं उपधान करुंगा । अब तक जीवन में पौषध भी केवल दो ही किये थे । जबकि तपस्या में नौ उपवास, दो अठाई छट्ठ व अट्ठम किये थे ।

आचार्य भगवन्त व सभी साधु भगवंत के सरल स्वभाव और प्रवचन से प्रभावित होकर मैंने प्रथम अठारिया करने का मानस बनाकर फॉर्म भरा था । उपधान प्रारंभ के प्रथम दिन मन में थोडी घबराहट थी कि उपधान में इतना तप कैसे होगा ? विशेष कर स्थंडिल की व्यवस्था से भी घबराहट हो रही थी परन्तु उपधान तप के तीन-चार दिन के बाद सब सामान्य लगने लगा । यहाँ के प्रतिदिन के कार्यक्रम, व्यवस्था तथा धर्म सम्बन्धी क्रिया करके प्रभावित होकर जो मैंने प्रथम अठारिया का मानस बना रखा था, उसे पूरे 47 दिन का प्रथम उपधान तप आराधना करने का मानस बना लिया ।

आचार्य भगवंत की बार-बार प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के कारण ही मैं मेरा पहला अठारिया, दूसरा अठारिया, चोकीया व छकीया स्वरुप कुल 47 दिन का उपधान तप सम्पन्न हो गया । तथा मैं मोक्ष माला पहनने का अधिकारी बना ।

ऐसा लगता है जीवन में जो तप असम्भव था, वह सम्भव हुआ है । इसके लिए मैं आचार्य भगवंत व सभी साधु भगवंत का कृतज्ञ और ऋणी रहूँगा ।

इस उपधान तप के कारण जीवन में बहुत परिवर्तन महसूस कर रहा हूँ । इनमें मुख्य-मुख्य निम्न प्रकार से हैं– 1) मेरे जीवन में अब तक कोई धर्मगुरु नहीं थे । पहली बार मुझे धर्मगुरु के रुप में मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, परम ज्ञानी सरल स्वभावी व निर्मल चित्त **परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** प्राप्त हुए । मैं अपने आपको सबसे बडा सौभाग्यशाली मानता हूँ । **जीवन के अंतिम पडाव में ऐसे विद्वान गुरु मिलना, किसी अन्धे को आँख मिलने के समान है ।**

2) भद्रंकर परिवार का सदस्य बनने का अवसर प्राप्त हुआ । जिससे भविष्य में गुरु भगवंत से सम्पर्क करने में सहुलियत रहेगी ।

3) सभी गुरु भगवंत के प्रवचन से सम्यक्त्व, चार गति में हुए पाप, मिथ्यात्व आदि के बारे में पूरी जानकारी तथा मन में उठे प्रश्न एवं जिज्ञासा का समाधान सरल उदाहरणों से जानने का अवसर प्राप्त हुआ ।

4) जीवन के अंतिम पडाव में कम से कम पाप बन्ध हो तथा पूर्व भव में हुए पाप बन्ध हेतु आलोचना एवं बारह व्रत लेने का अवसर प्राप्त हुआ ।

5) गुरुवंदन, देववंदन, प्रतिक्रमण के कुछ सूत्र को याद करने का अवसर मिला ।

6) सबसे बडी उपलब्धि रही–रात्रि भोजन का त्याग तथा कन्दमूल का त्याग ।

वैसे तो और भी कई सारी उपलब्धियाँ है । उनको लिखा जाये तो पन्ने कम पड जायेंगे । केवल मुख्य-मुख्य उपलब्धियों को ही स्थान दिया । यहाँ उपधान तप के दौरान की गई समस्त व्यवस्थाएं अच्छी रही । कभी कोई कमी महसूस नहीं हुई । सभी कार्यकर्ता का व्यवहार सराहनीय रहा है विशेषकर अभीषेकजी, राहुलजी व सहदेवजी का उत्तम रहा है । **सभी को धन्यवाद ।**

मेरी इच्छा पूर्ण हुई

विमलचंदजी सोनिगरा (भिलाड) (दूसरा उपधान)

इस उपधान में मैं भिलाड से दूसरा उपधान करने आया। इस उपधान में कराई जाने वाली विधियों से बहुत खुशी हुई, क्योंकि जब कोई विधि न समझने पर हम पुछते तब उसका समझाकर उत्तर दिया जाता, जो हमारे दिल और दिमाग में एकदम बैठ जाता। गुरुदेव के साथ पहली मुलाकात 11 साल पहले पालीताणा के कस्तुरधाम में **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी** की दीक्षा के समय हुई थी उस वक्त रसोडा संभालने के काम की सम्पूर्ण जिम्मदारी मेरी थी। फिर चातुर्मास में भी सेवा का लाभ मिला। उसके बाद मेरा आचार्यजी से कभी सम्पर्क न हो सका। लोढाधाम, महावीर धाम, एवं पोसालिया में उपधान करने की मेरी भावना पूर्ण न हो सकी क्योंकि मेरी शारीरिक तकलीफ थी। परन्तु फिर भी मैं अपने आपको सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मैं मेरा दूसरा उपधान पूर्ण हो पाया। मेरी आंतरिक इच्छा भी पुरी हुई। साथ में **आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** को मेरे गुरुपद पर स्थापन करने की कामना भी पूरी हुई। उपधान में बारह व्रत में से कुछ व्रत सम्पूर्ण जीवन भर के लिए ग्रहण किये और कुछ व्रत समय मर्यादाओं के साथ लिए। विशेष उपधान में सभी व्यवस्थाएं बहुत अच्छी रही।

मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. हमें नित्य खमासमणे दिलाया करते थे। उसमें हमे बहुत शांति रहती थी। 33 खमासमण उसके बाद ऋषिमंडल सूत्र का पाठ, बाद में 33 खमासमण फिर धार्मिक कथा फिर 34 खमासमण बाद धार्मिक प्रश्नोत्तर, इस तरह हमे 100 खमासमण कब दिये उसका पता ही नहीं चलता था। न ही थकान होती थी। वे विशेष हमारे सबके डॉक्टर महाराज थे। किसी भी बीमारी का इलाज इनके पास अणाहारी दवाई के रुप में मौजूद रहता था, जो हर किसी को तकलीफ से छुटकारा दिला देता था। ऐसे शांत एवं हंसमुख महाराज हमें मिले यह हमारा सौभाग्य रहा।

एकदम हंसमुख एवं शांत स्वभाववाले **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी** का सुबह एवं दोपहर का व्याख्यान हमें धर्म की ओर मन को मोडने में बहुत सहायक होता। अपनी हर रोज की दिनचर्या किस प्रकार धार्मिक विचारों में होनी चाहिए, उसकी प्रेरणा देते थे।

सुरीले कंठ के मालिक **बालमुनिश्री विमलपुण्यविजयजी** हमें मंदिर में देव-वंदन करने में हमेशा साथ रहते थे।

आचार्य भगवंत एवं चारों मुनि भगवंतों की निश्रा हमें इतनी अच्छी मिली, जिससे 35 दिन कहां गये पता ही नहीं चला। मेरा दूसरा उपधान पूर्ण हो गया, अब आगे इन्हीं गुरुदेवों की निश्रा में तीसरा उपधान भी करने की भावना रखता हूँ।

तीनों उपधान पूज्य गुरुदेव की निश्रा में हुए।

तेजराजजी वालचंदजी बोकरिया (मुंबई) (तीसरा उपधान)

मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर **श्री पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** एवं पूज्य भाई मुनिराजश्री की निश्रा में तीनों उपधान तप पूर्ण हुए।

पहला उपधान तप : 2009 में (विक्रोली)-मुंबई, **दुसरा उपधान तप :** 2024 में (पोसालिया-सिरोही) राज. **तीसरा उपधान तप :** 2025 में (उदयपुर) राज.।

यहाँ श्री **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा रोज बहुत ही अच्छी तरह से क्रिया व व्याख्यान होते । वे अच्छी तरह से व्याख्यान में उदाहरण देकर व्यवस्थित हर क्रिया व आराधना के बारे में समझाते थे ।

भाई मुनिराज श्री शालिभद्रविजयजी म.सा. हमे बहुत ही अच्छी तरह से 100 (सौ) खमासमणे दिलाते, वह भी तीन राउण्ड में धार्मिक कहानी सुनाकर करवाते है और मैंने सभी 100 (सौ) खमासमणे खडे रहकर दिये । मेरे शरीर में कोई कष्ट या परेशानी नहीं हुई ।

मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. हमे सुबह पडिलेहन की क्रिया, पोरसी की क्रिया व दोपहर का व्याख्यान बडी अच्छी तरह से उदाहरण (Example) देकर समझाया । हमारी हर क्रियाओं पर बारीकी से ध्यान रखते हुये गाईड किया ।

मुनिराज श्री विमलपुण्यविजयजी म.सा. हमे प्रतिक्रमण व बाकी क्रिया व मंदिर मे देववंदन अच्छे से स्तवन व स्तुति गाकर कराया । मुनिराज का कंठ बहुत ही सुंदर है ।

मुनिराज श्री पुण्यबलविजयजी म.सा. हमें इरियावहियाए, गुरुवंदन, देववंदन आदि की गाथा का स्वाध्याय कराते थे । **सभी का खुब खुब आभार ।**

वास्तविक जीवन सिर्फ संयम जीवन है

हंसाकुमारी जैन (सायला) (दूसरा उपधान)

मेरा दूसरा उपधान भी **परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** की निश्रा में पूर्ण हुआ । मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला । मेरी सारी क्रिया बहुत अच्छी तरह से पूर्ण हुई । मुझे कोई भी क्रिया में कोई कठिनाई नहीं हुई । सारी क्रियायें बिना थकावट के आराम से पूर्ण होती थी । मुझे उपधान में आकर बहुत अच्छा लगा ।

मुझे ऐसा लगा की उपधान ही एक ऐसा जीवन है, जिसमें हम साधना करके साधु के जैसा जीवन जी सकते है । इसी से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें 12 व्रतों का पालन करना चाहिए । उपधान तप में आकर मुझे लगा कि हम अपनी जीवन कम से कम जीवों की हिंसा करते हुए भी जी सकते हैं । उपधान तप में आकर मुझे अनेक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त हुआ और गुरु वाणी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला ।

गुरु की वाणी का बहुत अच्छा प्रभाव पडा । **मुझे लगा कि वास्तविक जीवन सिर्फ संयम जीवन ही है ।** संसार में रहकर हम सिर्फ थोडा पाप छोड सकते है । परन्तु संयम जीवन में आकर ही हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते है । इसी भावना से मैंने पिछले साल सुखधाम तीर्थ में पहला उपधान किया था । **परम पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** से मुझे मोक्ष-माला प्राप्त हुई । तब मुझे लगा कि मेरा दूसरा उपधान भी इन्हीं की निश्रा में होना चाहिए । मैंने दूसरा उपधान किया और निर्विघ्न पूर्ण हुआ है । हर एक क्रियाओं में अलग अलग मुनिराज की निश्रा मिली । उनकी अलग अलग वाणी से बहुत कुछ सीखने को मिला । **मुनिराज श्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** जो हमें रोज 100 खमासमण की क्रिया करवाते । साथ-साथ हर रोज नई-नई कहानी भी सुनाते । जिससे हमें उन कहानियों के माध्यम से कुछ अच्छी सीख मिलती । साथ ही अलग-अलग प्रश्नों से हमें तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ ।

मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. जो हमें हर रोज पोरिसी पढाने की क्रिया करवाते थे । साथ ही 12 व्रतों को कैसे स्वीकार करना है ? वह व्याख्यान के माध्यम से स्पष्ट करवाते । जिससे हमें उन 12 व्रतों को समझने में कोई परेशानी नही होती थी । उनका सरल-स्वभाव हमें बहुत अच्छा लगता था और उनकी

हरएक बात स्पष्ट रुप से समझने को मिलती थी। **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी** बहुत ही होशियार और शान्त स्वभाव के है। जिनसे हमें यह प्रेरणा मिली कि दीक्षा की कोई उम्र नहीं होती है। छोटी-सी उम्र में भी हम दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते है और जीवन में आगे बढकर मोक्ष तक पहुंच सकते है। **मुनिराज श्री पुण्यबलविजयी म.सा.** हमें यह प्रेरणा मिली की हमें हमेशा सरल और शान्त भाव से अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए।

उपधान में हमें सबसे बडा योगदान हमारे आदरणीय साध्वी गुरुवर्या का रहा। उनका हमें बहुत साथ मिला। दीर्घ संयमी **पूज्य साध्वीश्री निर्मलरेखाश्रीजी म.सा.** की शिष्या **साध्वीश्री समर्पणलीनाश्रीजी म.सा.** जो बहुत ही शान्त सरल स्वभाव के है। जिनसे हमें प्रेरणा मिली की हमें हमेशा सरल-स्वभाव से व्यवहार करना चाहिए। उनकी निश्रा में हमारे दोनों टाईम के प्रतिक्रमण बहुत अच्छे से होते थे और उनसे अच्छे स्तवन सज्झाय आदि सुनने को मिले और उनकी निश्रा में हमारी पडिलेहणा आदि की क्रिया बहुत अच्छे से होती थी।

पूज्य साध्वीश्री कृतपुण्याश्रीजी म.सा. हमें हमेशा पाठ करावाते थे। जिनसे मुख से हमें बहुत कुछ समझने को प्राप्त हुआ। हमें हमेशा ज्ञान की बातो का अनुभव करवाते थें। **पूज्य साध्वीश्री सत्वपुण्याश्रीजी म.सा.** और **पूज्य साध्वीश्री लावण्यपुण्याश्रीजी म.सा.** से हमें शिक्षा प्राप्त हुई कि हमें हमें हमेशा अपने गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। उनसे हमें बहुत अच्छे-अच्छे स्तवन आदि सीखने को मिले। मुझे उपधान में आकर बहुत अच्छा लगा।

दोष रहित बनने की साधना हे उपधान तप

अरुणा मुर्डीया (प्रथम उपधान)

सारा जीवन जिस शरीर की सार संभाल में लगाया, उससे बिल्कुल हटकर आत्मा को निर्मल, दोष रहित बनाने की साधना है उपधान तप। भोजन, वस्त्र आदि की मर्यादा में रहकर भी आज तक किसी भी चीज की कमी महसुस नहीं हुई। ``हमने अपना संसार इतना विस्तार किया कि सारी शांति छीन गई''—यह यहां आकर जाना। प्रवचन में बताये गये 12 व्रत और 14 नियमों की मर्यादा में सीमित करके हम वह शांति महसूस कर पायेंगे। **पू.पू. आचार्य भगवंत श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** ने बताया कि ये जो 5 इन्द्रियां है इनकी गुलामी से सावधान रहना है ये ही हमें संसार में सबसे अधिक गिराने वाली है। मैं जरुर कोशिश करुंगी कि इन इन्द्रियों की गुलामी में न रहूं।

सभी महाराज साहेबजी से कुछ न कुछ ज्ञानवर्धक बातें सीखने को मिली। यह तभी सफल हो पायेगी जब तक हम इन्हें आचरण में ला पाए।

सोच से भी अधिक लाभ हुआ उपधान तप में

नीतू सिंघवी (प्रथम उपधान)

उपधान तप का हर दिन हमें **आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के वासक्षेप का इन्तजार रहता था, वासक्षेप रुपी आशीर्वाद हमें हर दिन उत्साहित रखता था। जब-जब हमें उनके द्वारा वाचना प्रदान की जाती है, हमें जो सूत्र का अधिकार मिलता, उस खुशी के लिए मेरे पास शब्द नहीं है।

प्रवचन में कहे गए शब्द हमारी आत्मा के लिए बोध स्वरुप होते थे । छह आवश्यक के लिए जो ज्ञान हमें प्रदान किया गया, वह अपने जीवन में Apply करुंगी । इस ज्ञान को जीवन का हिस्सा बनाने से ही जीवन में परिवर्तन आएगा । आचार्य भगवंत आशीर्वाद यूही बना रहे ।

मुनिश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. हमें प्रतिदिन 100 खमासमण दिलवाते थे । शुरुआत में तो बहुत मुश्किल लगता था लेकिन बाद में हमारे लिए बहुत आसान हो गया, लगता कि **``आत्मा में अनन्त शक्तियाँ है जिन्हें पुरुषार्थ करके बाहर लाने की आवश्यकता है ।''** खमासमण के बीच में **``श्री ऋषिमंडल स्तोत्र, शिक्षाप्रद कहानियाँ, ज्ञानवर्द्धक प्रश्न''** आदि के माध्यम से हमें पता ही नहीं चलता, कि कब हमारे 100 खमासमण पूरे हुए और स्फूर्ति आ जाती है । ये खमासमण मुझे "healthy tonic" जैसे महसूस हुए ।

``देव, गुरु, धर्म पर अटूट श्रद्धा से ही हम सम्यक्त्व को प्राप्त कर सकते है ।'' इस प्रकार **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** के द्वारा 12 व्रत और 14 नियमों को बहुत ही सरल भाषा में और सूक्ष्मता से समाझाया गया । यह ज्ञान जीवन के लिए बहुत जरुरी है । सभा के द्वारा पूछे सभी प्रश्नों के उत्तर वे बहुत ही अच्छे दृष्टांत देकर समझाते थे । वैसे तो मैं 6-7 वर्षों से यह 12 व्रत का पालन कर रही हूँ लेकिन प्रवचन में समझाने के बाद और अधिक व्यवस्थित तरीके से पालन करने का प्रयास करुंगी । प्रवचन में समजाने का तरीका बहुत अच्छा था । जिससे समय का पता ही नहीं चलता और ज्ञान में अभिवृद्धि हो जाती । उनके द्वारा बताए गए 1) सुख में लीन नहीं 2) दुःख में दीन नहीं 3) पाप में पुष्ट नहीं बनना, ये नियम हमारे लिए बहुत जरुरी है, जिसे मैं अपने जीवन में Apply करने की कोशिश करुंगी ।

पू. साध्वीश्री समर्पणलीनाश्रीजी म.सा. के सान्निध्य में **पू. साध्वीश्री कृतपुण्याश्रीजी म.सा.**, **पू. साध्वीश्री सत्वपुण्याश्रीजी म.सा., पू. साध्वीश्री लावण्यपुण्यश्रीजी म.सा.,** के साथ प्रतिक्रमण, पडिलेहन की क्रिया करते है । सभी साध्वीजी भगवंत हंसमुख स्वभाव वाले थे । प्यार से समझाते थे । पच्चक्खाण भाष्य के बारे में जानकारी, स्तवन, उपधान की आलोचनाओं को समझाना आदि कई विषयों पर सरल तरीके से समझाया गया, जिसमें हमारी पूछने की जिज्ञासा बनी रही ।

तीन लोक के नाथ **``श्री वासुपूज्य स्वामी''** परमात्मा के प्रांगण में देव-गुरु-धर्म की असीम कृपा हमें प्राप्त हुई है । जो मैंने सोचा भी नहीं था उससे अधिक लाभ की प्राप्ति हुई ।

Life का Turning Point

धीरजकुमार वालचंदजी गुंगलिया (दूसरा उपधान)

पिछले वर्ष सुखधाम तीर्थ में **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के निश्रा में मैं पहले उपधान में अठारिया करने के लिए सोचकर आया था । उसके पहले मेरे जीवन में मैंने कभी भी उपवास या कोई तप नहीं किया था लेकिन यहाँ आकर भगवान व गुरुदेव की असीम कृपा से मेरा पहला उपधान (47 दिन) सुखपूर्वक पुरा हुआ और मैंने मोक्ष माला धारण की मुझे **श्री आचार्य गुरुदेवने नवकार मंत्र** व **श्री भद्रंकरविजयजी सद्गुरुभ्यो नमः** की प्रतिदिन एक माला गिनने को कहा जो मै आज तक रोज कर रहा हूँ ।

फिर मैंने सोचा लिया था कि मैं जल्दी से गुरुदेव की निश्रा में दुसरा व तीसरा उपधान तप करुँगा और अब मेरा दुसरा उपधान तप पूर्ण हुआ है । पहला उपधान तप करने के बाद मेरी लाईफ में बहुत ही बदलाव

आये । मेरे पारिवारिक मतभेद भी कम हो गये । कुछ परेशानी चल रही है जो भगवान व गुरुदेव की कृपा से कम हो जायेगी यह मेरा पुरा विश्वास है ।

यहाँ भी **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा रोज बहुत हि अच्छी तरह से व्याख्यान में उदाहरण देकर व्यवस्थित हर क्रिया व आराधना के बारे में समाझाया ।

सभी गुरुभगवंत उपधान तप में हमे स्वाध्याय करने को कहते और हमारी छोटी-बडी गलतियों का बारीकी से ध्यान रखकर हमे उचित मार्गदर्शन देते थें ।

श्रद्धा से बढती है आत्मिक शक्तियाँ

अरिहा अनीलजी जैन-M.B.A. नीमच (अठारिया)

यह मेरा पहला अठारिया देव-गुरु-धर्म की असीम कृपा से बहुत अच्छा रहा । ओफिस से इतने दिन की छुट्टी लेकर यह करना मुश्किल लग रहा था और उससे भी ज्यादा खुद के मन को तैयार करना कि इतनी क्रिया और तप कैसे हो पाएगा परंतु साधु-साध्वीजी भगवंतों के प्रेरणादायक प्रवचन व आशीर्वाद से सब कुशलतापूर्वक हो गया । अनुशासित दिनचर्या का पालन करके मानसिक और शारीरिक बदलाव भी काफी देखने को मिला । साधुजी भगवंतों द्वारा पढ़ाए गए बारह व्रत आदि व पू.सा.श्री समर्पणलीनाश्रीजी म.सा. द्वारा समझाया तत्त्वार्थ सूत्र को भिन्न प्रकार के सांसारिक उदाहरणों से समझा । यह सब समझ कर पता चला कि किस तरह हम संसार में पाप करने से बच सकते हैं । जीवों की विराधना से कैसे बचा जा सकता है । मन में उठते अलग अलग प्रश्नों के उत्तर भी काफी अच्छे से समझाए गए । यह सब करके मुझे समझ आया कि आत्मा में असीम शक्ति है और वह शक्ति देव, गुरु व धर्म में श्रद्धा रखने से बढती रहती है ।

देशविरति का अभ्यास तो शायद काफी भवों से हैं पर सर्वविरति का पालन करने की यह कुछ दिन की क्रिया भी जीवन में अच्छे बदलाव लाती है और हमें अपने घर यानी की **'मोक्ष'** पथ पर जाने के रास्ते खोलती है ।

मुझे यहां बहुत कुछ सीखने को मिला व आराधना भी अच्छे से हुई । अब भावना व प्रार्थना प्रभु से यही है कि मुझे ऐसी आराधना व तप करने के मौके मिलते रहे और पाप कर्मों की निर्जरा कर मुझे अपना घर (मोक्ष) जल्द से जल्द मिले ।

स्थानकवासी होने पर भी उपधान किया

पुष्पा हरकावत (फतेहपुरा) (प्रथम उपधान)

मुझे मालदास की सहेरी आराधना भवन से पता लगा कि चित्रकूट नगर में महावीर जैन विद्यालय में उपधान हो रहा है । वैसे तो मैं स्थानकवासी हूँ । उपधान क्या होता है यह जानने मैंने भी फॉर्म भर दिया । यहां सुबह 4.00 बजे उठकर रात को 8.00 बजे तक क्रियाएं करते है । देव वंदन क्रियाएं होती है । मंदिर की परिक्रमा भी करते है । प्रतिदिन तीनों साहेब का प्रवचन होते है । तीनों साहेब का प्रवचन बहुत ही रोचक व ज्ञान भरा होता था । गुरुदेव आचार्य भगवंत तो कई महापुरुषों की जीवनियां व दृष्टांत सुनाते थे ।

हमें बुराई और पाप की चट्टानों को तोडना होगा

ललिता रांका-उदयपुर (अठारिया)

मरुधर रत्न, **पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** चातुर्मास के पूर्व आयड जैन मंदिर में पधारे । एक दिन हम दोनों को आचार्यश्री के दर्शन का अवसर मिला । उसी समय आचार्यश्री ने मेरा नाम लिख दिया और कहा की तुम्हें उपधान तप करना है । मेरे भी जीवन में इस प्रकार की घटनाएं आती रही कि `गुरुदेव के आशीर्वाद मुझे वहाँ पहुंचा देते है जहां मुझे जाना होता है ।'

आचार्य भगवंत के पास जीवों की योग्यता को पहिचान ने की शक्ति है । ऐसे आचार्य भगवंत विरले होते है । सभी साधु साध्वियों में ये शाक्ति नहीं होती । आचार्य भगवंत को मैंने गुरु बनाया है । वे अपने सभी शिष्यों को मोक्ष के मार्ग पर बढ़ा सकते है । आचार्य भगवंत को भव्य जीवों की पहचान करते है । उन जीवों को पहचान कर उनकी योग्यता (सामार्थ्य) के अनुसार जप तप बताते है ।

मुनियों का दिल करुणा से लबा-लब भरा रहता है । निःस्वार्थ कृपा करने वाले मुनि ही होते है । किसी प्राणी को संसार सागर में डूबता हुआ देखते है तो मुनियों का ह्रदय हिल जाता है । वे कष्ट उठाकर भी उसका कल्याण करने का प्रयत्न करते है ।

ये उपधान तप की आराधना करने के लिए उन भव्य जीवों को पहिचान कर उनकी पात्रता को देखकर उन्हें सही मार्ग पर आगे बडा देते है । उन्हें यह पता रहता है कि कौन व्यक्ति धर्म की कक्षा में कितना जल्दी आगे बढ सकता है । ऐसा अवसर प्रदान कर उन्हें जन्म मरण के बंधनो से मुक्ति तक पहुंचा देते है ।

धर्म क्या है ? अपने अन्दर रहे परमात्मा को जागृत करना, चरितार्थ करना । यह कैसे होता है । चट्टानो के नीचे पानी है, पर चट्टानों को तोडे बिना प्यास नहीं बुझती । परमात्मा को पाने के लिए एक मात्र बाह्य साधना कार्य नहीं करती, आध्यात्मिक साधना चाहिए । हमे बुराई और पाप की चट्टानों को तोडना होगा ।

जब आचार्य भगवंत ने प्रवचन में इस प्रकार समझाया कि व्यक्ति अपने व्रत प्रत्याख्यान के लिए तैयार हुए और सभी श्रावक श्राविकाओं ने बारह व्रत स्वीकार किये । मुझे ये उपधान तप की साधना स्वरुप आध्यात्मिक जीवन को आगे बढाने में सहयोगी आचार्य भगवंत का बडा उपकार है । मैं अपनी ओर से आचार्य भगवंत के दीर्घ आयु, निरोगी स्वास्थ्य प्राप्ति और धर्म प्रभावना करते रहे ऐसी मंगल कामना करती हूँ ।

जीवन का स्वर्णिम अवसर है उपधान तप

विद्या पोरवाल (उदयपुर) (प्रथम उपधान)

पूज्य आचार्य भगवंत के चातुर्मास में उनके सान्निध्य में रहकर प्रवचन सुनने का अवसर मिला । उसी दौरान उपधान तप के बारे में मालदास स्ट्रीट आराधना भवन में उस तप की महत्ता के बारे में सुना तभी मेरी भावना हुई और मैंने अठारिया के लिए फॉर्म भरा । समय गतिशील हैं जैसे जैसे समय नजदीक आ रहा था दिल में उमंग व उत्साह बढता गया । 1st Oct. को सामुहिक उत्तरपारणे के लिए मैं समयानुसार महावीर जैन विद्यालय वासुपूज्य दादा की शरण में आई । सभी आराधक जाने पहचाने थे । 2nd Oct. को सुबह की नंदि की क्रिया के साथ ही सभी का प्रवेश हुआ । उसी दौरान सभी क्रियाओं के बारे में बता दिया गया ।

प्रतिदिन प्रातः सहज स्वभावी, सरल मना, सूर्य के समान तेजस्वी, वाणी की मधुरता से लगता जैसे सरस्वती का वास हो ऐसे **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का सरल शब्दों में अर्थ सहित धार्मिक दृष्टान्तों द्वारा मंगलकारी हृदय को स्पर्श करनेवाला मार्मिक प्रवचन होता । मेरी जिन्दगी में पहली बार इस तरह था । खूब गहराई व स्पष्ट शब्दों में प्रवचन सुनने को मिले । गुरुदेव की मधुर वाणी द्वारा मैं अज्ञान के अंधकार से निकलकर ज्ञान रुपी प्रकाश की ओर चली । मुझे लगा कि संसार असार हैं, फिर भी इस जीवन में गृहस्थ अवस्था में रहकर जयणा द्वारा विवेक से कई पापों से बच सकते है । प्रभु द्वारा बताई जिनवाणी से न सिर्फ इस लोक, अपितु परलोक को भी सुधार सकते हैं । हमारा जैन शास्त्र ही ऐसा है जो बताता है कि किस तरह हम भवों भव तक भावनाओं के भाव में आकर ऊपर उठ सकते हैं । जन्म-जरा-मृत्यु निवारण के पद को प्राप्त कर सके । संसार में रहकर श्रावक धर्म के 12 व्रत-नियमों को पालनकर कई पापों से छूटकारा दिलाकर आत्म साधना में आगे बढ सकते हैं ।

इस तरह अठारिया पूर्णाहुति के दिन नजदीक आने लगे । मेरे मन में उथल पाथल चल रही थी । स्वास्थ्य और वातावरण, देव गुरु की कृपा से अनुकूल था । मन आगे आराधना करने का हो रहा था और मैंने मोक्षमाला का मानस बनाया ।

सुबह क्रिया के बाद 100 खमासमणे के लिए तैयार **मुनिराजश्री शालीभद्रविजयजी म.सा.** बहुत खुशी भरे माहोले में तीन अन्तराल मे 100 खमासमणे की क्रिया, ऋषिमण्डल स्तोत्र, धार्मिक दृष्टान्त द्वारा करवाते ।

मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. जिनवाणी का सार अर्थ सहित समझाते थे । कहाँ समय व्यतीत होता पता ही नहीं चलता । शाम को साध्वीजी महाराज का क्रिया करवाना, प्रतिक्रमण में मीठी वाणी में सज्झाय-स्तवन सुनाकर भाव विभोर कर देते । जैसे जैसे समय निकलता जा रहा था, कभी भी सांसारिक चर्चाओं का या मोबाइल आदि के बारे में ख्याल नहीं आया । सारे समय आगे से आगे धार्मिक क्रियाओं में लीन रहे ।

अब समय नजदीक आते ही लगने लगा कि वापस संसार के दलदल में जाने का । अनचाहे में भी उसी राह पर भटकना पडेगा । लेकिन मैं देव, गुरु से यही प्रार्थना करुंगी कि मुझे सद्कार्य, सुकृत करने का मार्ग प्रशस्त करे ताकि मैं अपने भव को सुधार सकूं ।

अन्त में मेरा यह उपधान मेरी इस जिन्दगी का स्वर्णिम अवसर रहा जिसे मैं इस जीवन में नहीं भूल सकूंगी । प्रभु तथा गुरुदेव से आशीर्वाद चाहूंगी कि मेरा दूसरा उपधान जल्दी हों ।

पैर दर्द की तकलिफ ही भूल गई

निर्मला कोठारी (उदयपुर) (प्रथम उपधान)

गोडवाड के गौरव हिन्दी साहित्यकार **आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि साध्वीश्री समर्पणालीनाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप का शुभारम्भ दिनांक 2-10-2025 विजया दसमी के दिन हुआ । विजय यानि जीत । बहुत शुभ मुहूर्त था । उपधान में कुल 59 आराधक थे । दो-तीन दिन में ही हम सब इस वातावरण में अच्छी तरह मिल गये ।

इसमे 20 वर्ष की उम्र से 80 वर्ष की उम्र के लोगों का समावेश था । परिसर ऐसा जैसे कोई नंदन वन

हो । चारों ओर हरियाली व पहाडी थी । शांत वातावरण में देव विमान समान दादाश्री वासुपूज्य स्वामी का संदर देवालय जो मनमोह लेता ।

सभी आराधकों में इतना प्रेम व समंजस था कि एक परिवार का माहोल हो गया व यही अपना घर व परिवार लगने लगा ।

गुरुदेव की प्रेरणा से मैंने अठारिया के लिए प्रवेश किया । पहले कभी कोई तपस्या नहीं की लेकिन देव व गुरुदेव की असिम कृपा से मेरा प्रथम उपधान पूर्ण हो गया । मेरे घुटनों में दर्द भी था लेकिन मैं यहाँ आराम से उतर चढ सकी, पता ही नहीं चला कि मुझे कोइ तकलीफ है । दिनचर्या इतनी व्यस्त थी कि समय व दिन का पता ही नहीं चलता । सुबह 4.00 बजे थाली बजने के बाद शाम 8.00 तक बराबर व्यस्त रहते ।

मुनिराज श्री शालीभद्रविजयजी म.सा. सुबह 100 खमासमण दिलाते जिससे हमारे शरीर में नई चेतना पैदा हो जाती । पश्चात् रोज सुबह नई-नई प्रेरणा वाली कहानियाँ सुनाई व हमे जीवन में बहुत कुछ सीखने समझने को मिला ।

सुबह प्रतिक्रमण बाद में क्रिया । फिर 9.30 बजे पोरिसी व पडिलेहन की क्रिया होती । पश्चात् **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** द्वारा मधुर आवाज में सार गर्भित प्रवचन होता, जिसमें समय का पता ही नहीं चलता । उन्होंने हमे विस्तार से श्रावक के बारह व्रत और 14 नियम के बारे में बहुत ही अच्छी तरह समझाया जिससे हमारे जीवन मे सम्यग्दर्शन के प्रति गहरी आस्था पैदा हुई । हमे लगा कि सच्चा सुख तो मोक्ष में ही है । मोक्ष ही हमारा सच्चा घर है ।

फिर 10.30 बजे आचार्यश्री द्वारा सरल व मधुर भाषा में प्रेरणादायी प्रवचन होता था, जिसमें समय का पता ही नहीं चलता । प्रवचन इतने उपयोगी, उपकारी व हित शिक्षा से भरा होता कि हमारा जीवन ही बदल गया । हमने अपने जीवन में जो गल्तियाँ की है, वे सुधार कर, विवेकी बनकर अरिहंत परमात्मा के बताए मार्ग का अनुसरण करेंगे । अब तो लगने लगा कि दूसरा उपधान भी गुरुदेव की निश्रा में ही करना चाहिए ।

अब तो यहां का वातावरण इतना अनुकूल लगने लगा की सब से बिछडने का दुःख लगने लगा ।

मेरा अठारिया बना मोक्षमाला का उपधान

स्नेहलता सुराणा (उदयपुर) (प्रथम उपधान)

परम उपकारी **आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** जब से उदयपुर मे पधारे तभी से उनका प्रोत्साहन तथा प्रेरणा रही कि उपधान करने जैसा है, लेकिन मुझे हमेशा यही लगता कि यह तप बहुत कठीन है तथा मेरी शक्ति के बाहर है । मुझसे नहीं होगा । कई बार आचार्यश्री के पास वंदन करने जाने में भी संकोच होता था । लेकिन एक दिन मैंने हिम्मतकर फॉर्म भरा उसी समय गुरुदेव ने वासक्षेप डाला और मधुर सरल वाणी से फरमाया **``हो जायेगा''** । शायद उस वाणी में जादु साथ होगा । उस क्षण मेरे पुण्य का उदय हुआ । जैसे-जैसे समय नजदीक आ रहा था एक तरफ मन में उलझन थी तो दूसरी तरफ अलग ही तरह की उत्सुकता लग रही थी । समय नजदीक आ गया 1st Oct. को सायं. 4 बजे सभी के साथ उत्तर पारणे के लिए महावीर विद्यालय वासुपूज्य दादा के यहाँ पहुंची । परिसर की छटा देखते ही बनती थी । अलग ही तरह का माहोल था । सभी के चेहरे खीले हुए थे । सभी एक दूसरे से परिवार की तरह मिल रहे थे । **``नाण की क्रिया''** मैंने अपने जीवन में यह शब्द भी पहली बार सुना था । दूसरे दिन समय के अनुसार नाण की क्रिया आचार्यश्री ने अपने मुखरविन्द से करवाई ।

ऐसा लगा जैसे जीवन में जीने की नई कला मिल गई। शरीर में अलग ही स्फुर्ति देव, गुरु व शासन माता ने भर दी हो। **मुनिराज श्री शालीभद्रविजयजी म.सा.** हंसते हुए 100 खमासमणे पुरे करवा देते। श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र का पठन कर फिर जिनवाणी के छोटे छोटे मार्मिक दृष्टान्त देते एवं प्रश्नोत्तरी होती। उसके बाद **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** प्रवचन देते। प्रवचन सहज व सरल भाषा में होते। **आचार्यश्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का तो कहना ही क्या, जैसे साक्षात सरस्वती उनकी जिह्वा पर हो ऐसी जिनवाणी सनाते। हमें छोटे छोटे धार्मिक दृष्टान्त देकर जयणा द्वारा हम अपने गृहस्थ जीवन में पापों से बच सकते है और आत्मा पर लगे कर्म का क्षय कर जन्म जरा मृत्यु निवारण की और अग्रसर होकर शाश्वत सुख को प्राप्त कर सके–यह समझाते। इस पद को प्राप्त करने के लिए किसी के प्रति आसक्ति भाव नहीं रखना। भव आलोचना से आत्म शुद्धिकरण करते हुए पापों के गुनाह को स्वीकार करना।

कैसे 18 दिन बीत गए पता ही न चला। न परिवार वालों की याद, न सांसारिक बाते। सिर्फ और सिर्फ धार्मिक क्रियाएँ। दूसरे अठारिया की नाण सजी। मोक्षमाला वाले सभी आराधकों को नाण के समक्ष देखकर मुझे ऐसा लगा मानो प्रभु के समवसरण की रचना हुई और मैं उसमें क्रिया करने से वंचित रह गई। मेरा दिल भर आया। तुरन्त **मुनिराज श्री शालीभद्रविजयजी म.सा.** के पास गई। आखों में अश्रुधारा बाहते हुए दिल की बात कही। साहेबजी ने दूसरा रास्ता बताया कि दो दिन break देकर वापस आ जाना। फिर आचार्यश्री से बात कही और मुझे अनुमति मिल गई। 4 दिन बाद वापस से नाण के समक्ष हम तीन आराधकों ने प्रवेश किया और हमारा प्रथम उपधान पूर्ण हो गया।

कितना भी घर रहकर स्वाध्याय कर लिया जाए लेकिन गुरु भगवंत के मुखारविन्द से जो जिनवाणी तथा उसका स्पष्टीकरण सुनने व सीखने को मिलता हैं वह सीधे आत्मा को स्पर्श करता है। किसी तरह हमें कर्म की Philosophy को follow करना है ताकि अन्तरंग शत्रुओं को दुर कर, सुगुणों को जीवन में आत्मसात कर, कुछ पुण्य प्राप्त कर सके। शीघ्र महाविदेह क्षेत्र में जाकर चारित्र धर्म को अंगीकार कर आत्मा मोक्षगामी permanent home में पहुँच सके। देव, गुरु से यही आशीष चाहूंगी कि मुझे ऐसी शक्ति देना कि मैं मन वचन काया से दूसरे के गुणों की अनुमोदना कर सकू।

निर्जरा का सुनहरा अवसर मिला

मंजुबेन पोरवाल–राजनगरवाले(प्रथम उपधान)

पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. की किताबे पढकर व प्रवचन सुनकर मुझे प्रेरणा मिली कि इनकी निश्रा में मुझे पहला उपधान करना है। 2 अक्टूबर को नाण के समक्ष क्रिया की तथा जो वासक्षेप प्राप्त हुआ उससे मानो ऐसा लगा जैसे मेरे में अलग ही प्रकार की शक्ति आ गई हो। दैनिक कार्यक्रम 100 खमासमणे, 100 लोगस्स का काउस्सग, देववंदन, जिनवाणी श्रवण, प्रतिक्रमण आदि क्रिया करते हुए दिन कहाँ निकल जाता पता नहीं चलता। तप जप के द्वारा पापों की निर्जरा करने का सुनहरा अवसर प्रभु की कृपा तथा देव, गुरु का आशीर्वाद से मिला। प्रवचन में धार्मिक द्रष्टान्तों द्वारा कई छोटी छोटी बाते सिखने को मिली, जो मैं गृहस्थ जीवन में रहती हुई अपनाने की पुरी कोशिश करुंगी। समय समय पर सुकृत कार्य कर सकूं ऐसी में प्रभु से प्रार्थना है। **मुनिराज श्री शालीभद्रविजयजी म.सा.** 100 खमासमणे के साथ में भाव भरी धार्मिक कहानियाँ अलग-अलग सुनाते थे। **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** पोरिसी पढवाते एवं प्रवचन देते थे। साध्वीजी म.सा. समर्पणलीनाश्रीजी आदि-4 मुस्कराते हुए चेहरे और अपनी मधुरवाणी से सारी क्रियाएँ प्रतिक्रमण करवाते थे।

यह उपधान मेरे लिये बडा ही यादगार रहेगा । परिसर का माहौल सभी आराधकों आचार्यश्री की सहयोग कमी नहीं भूलने जैसा है और भावना ऐसी जगी है अति शीघ्र ही दूसरा तीसरा उपधान भी आचार्यश्री की ही निश्रा में जल्दी से जल्दी करुं । आचार्यश्रीजी के किताब में से भीमसेन चरित्र की स्टोरी पढकर मेरे ह्रदय में बहुत परिवर्तन आया ।

व्यवस्था बहुत अच्छी थी ।

वसन्ती मेहता (देलवाडा)

मरुधन रत्न, **पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा में उपधान तप की आराधना का आनंद व लाभ मिला । उपधान तप का बडे आनंद से प्रवेश हुआ । मन में बहुत खुशी और आनंद था । सर्व प्रथम थोडा अटपटा लगा । दो दिन बाद सब अच्छा लगने लगा ।

अध्यात्मिकता दिनोदिन उन्नतशील बनी

–राजेन्द्रकुमार तलेसरा (उदयपुर)–(तृतीय उपधान)

पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. की शुभ निश्रा में दि. 2 अक्टूबर 2025 से 31 अक्टूबर 2025 तक मेरा तीसरा उपधान तप बहुत ही उत्साहपूर्वक, अध्यात्मिक वातावरण में पूर्ण हुआ ।

पूज्य आचार्य भगवंत बहुत ही सरल स्वभाव, ज्ञान के भण्डार का प्रत्यक्ष प्रमाण है । उनका सार गर्भित, तत्त्वों से पूर्ण, सहज भाषा में दिया गया व्याख्यान सुनकर लगा कि, **``मुझे मेरे जीवन में एक सद्गुरु की खोज थी, वह पूरी हो गई ।''** उनकी लिखी हुई पुस्तक पढता हुँ तब उसे छोडने का मन नहीं होता । ऐसे सद्गुरु का साथ चिर समय तक मिलता रहे । उनके ज्ञान और अनुशासन ने मेरे दैनिक जीवन के प्रति सोचने-समझने की धारा को बदल दी । इसके फलस्वरुप मेरी आध्यात्मिकता दिनोदिन उन्नतशील बनी है । इसका अनुभव मैं आज छ'री पालक संघ में दि. 28 नवंबर को, एक महिने के बाद भी महसुस कर रहा हुँ ।

उपधान तप दरम्यान प्रतिदिन 100 लोगस्स का काउसग्ग, 100 खमासमण, उपवास-नीवि का तप, प्रातः जल्दी उठना, रात्रि में जल्दी सोना आदि जीवन शैली के फलस्वरुप मेरा 8 किलो वजन भी कम हुआ, जिसके फलस्वरुप मैं धार्मिक क्रिया में पहले की अपेक्षा वर्तमान में ज्यादा सक्रिय और उत्साही बना हुँ ।

इस उपधान तप में **मुनिराज श्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** रोज सुबह 100 खमासमण दिलाने के साथ ऋषिमंडल स्तोत्र, धर्म की रोचक कथाएँ और धार्मिक प्रश्नोत्तर से हमारे धार्मिक ज्ञान का विकास करते थे । उनका मधुर स्वभाव हमें उनकी ओर आकर्षित करता था । **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.** दिनभर साथ रहकर सभी क्रियाएँ उल्लास भाव से निश्चित समय पर कराते थे । उनकी व्याख्यान शैली बहुत ही सरल है । वे धर्म के सुक्ष्म तत्त्वों को ह्रदय में उतार देते थे । जीवन परिवर्तन करने में धार्मिक भाव, कषायों का विभाव और जयणा का पालन जो दैनिक जीवन हम कर सकते है वह विस्तार पूर्वक ह्रदय में उतार दिया ।

आज छ'री पालक संघ का पांचवाँ दिन पूर्ण हो रहा हैं और 75 वर्ष की उम्र में मैंने सभी छ'री पालक संघ के नियमों का पालन करते हुए अधिक उत्साहित महसुस कर रहा हुँ ।

शासन प्रभावना के समाचार

आसो सुदी 10, वि.सं. 2081, दिनांक 2-10-2025 के शुभ दिन मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा 5 एवं सा. श्री समर्पणलीनाश्रीजी आदि ठाणा-4 का शुभ निश्रा में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ मालदास स्ट्रीट-उदयपुर के तत्त्वावधान में श्री वासुपूज्य स्वामी जिनालय-महावीर विद्यालय-चित्रकूट नगर-उदयपुर में भद्रंकर परिवार द्वारा आयोजित महामंगलकारी उपधानतप की आराधना बडे ही उत्साह और उल्लास के साथ प्रारंभ हुई ! इस उपधान में कुल 59 आराधक जुडें !

प्रतिदिन उपधान तप के आराधकों की सुबह-शाम की क्रिया एवं प्रात: 10.15 से 11.30 बजे तक प्रेरणादायी प्रवचन **पूज्य आ.श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** देते थे । 100 खमासमण एवं ऋषिमंडल स्तोत्र श्रवण पूज्य मुनिराजश्री शालिभद्रविजयजी म.सा. द्वारा कराया जाता है । प्रतिदिन प्रात: 9.45 से 10.15 तक एवं उपवास के दिन दोपहर 3.00 से 4.00 तक प्रवचन मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी देते थे ।

दि. 14 अक्टूबर को बाल मुनिराज श्री विमलपुण्य-विजयजी म.सा. के श्री उत्तराध्ययन सूत्र के योगोद्वहन में मंगल प्रवेश हुआ । आज पूज्य आचार्यदेव श्री रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. के दीक्षा दाता वर्धमान तपोनिधि पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी म.सा.** की पुण्यतिथि निमित्त गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ । जालोर से पधारे तेजपालभाई ने गुरुभक्ति गीत एवं पूज्यश्री का परिचय दिया । तत्पश्चात् पूज्य आचार्य भगवंत ने गुणानुवाद करते हुए उनपर हुए पूज्य पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी के उपकारों का स्मरण करते हुए स्मरणांजलि प्रदान की ।

दि. 15 अक्टूबर को प्रवचन दरम्यान उपधान तप के सभी तपस्विओं ने पूज्यश्री को प्रदक्षिणा देते हुए गुरु पद पद स्थापित किया ।

दि. 20 अक्टूबर को प्रात: काल के शुभ मुहूर्त में मोक्ष माला परिधान करने वाले आराधकों ने दूसरे अठारिये में मंगल प्रवेश हुआ । फूलों से सजी नाण में विराजमान चार परमात्मा के सन्मुख तीन प्रदक्षिणा देकर मंगल प्रवेश की क्रिया की । 18-18 दिनों तक जीवन में प्रथम बार एकान्तर उपवास सहित पौषध व्रत के द्वारा विरतिधर्म का आस्वाद प्राप्त कर देव-गुरु की असीम कृपा के प्रत्यक्ष प्रभाव को अनुभव करने वाले आराधकों ने मोक्षमाला प्राप्ति तक की निर्विघ्नतया आराधना के लिए मंगल प्रार्थना की ।

प्रवेश विधि के पश्चात् आज दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर प्रात: 9.45 बजे से भाववाही स्तुतिओं के सामूहिक गान के साथ **'प्रभु महावीर निर्वाण कल्याणक भावयात्रा'** का कार्यक्रम हुआ । पूज्य आचार्य भगवंत ने भगवान श्री महावीर स्वामी के जीवन प्रसंगों का रोमांचक वर्णन किया ।

दि. 22 अक्टूबर को वीर संवत् 2552 एवं विक्रम संवत् 2082 के नूतन वर्ष की मंगल प्रभात में प्रात: 7.00 बजे नवस्मरण एवं श्री गौतमस्वामी रास श्रवण स्वरुप मांगलिक का आयोजन हुआ । पूज्यश्री ने इन मंगलपाठों की रचना का इतिहास एवं संक्षेप में महत्त्व समझाते हुए मंगल पाठ किया । बीच में पूज्यश्री द्वारा आलिखित **260 वीं पुस्तक ''समाधि की साधना''** का भव्य विमोचन पुस्तक प्रकाशन के लाभार्थी **मातुश्री चन्दाबेन तेजसिंहजी गोडवाडा परिवार** एवं **श्री संघ के पदाधिकारी राजेशजी**

जावरिया, हेमन्तजी सिंघवी, जशवंतसिंहजी सुराणा आदि के द्वारा किया गया । कार्यक्रम के बाद पधारे हुए सभी महानुभावों की नवकारशी हुई ।

दि. 26 अक्टूबर को ज्ञान पंचमी निमित्त प्रात:9.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद सामुहिक रुप से ज्ञान पंचमी का देववंदन हुआ । आज के मंगल दिन पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म. सा.** को ज्ञान पंचमी की आराधना करते हुए 50 वर्ष पूर्ण हुए ।

चातुर्मास जयोत्सव

दि. 27 अक्टूबर को प्रवचन दरम्यान पूज्यश्री के आगामी चातुर्मास की विनती हेतु 3 बसों द्वारा श्री जैन संघ-पिण्डवाडा से 150 लोग पधारे । श्री संघ के अध्यक्ष श्री महेशजी सागरमलजी राठोड, कोषाध्यक्ष मनीषभाई रणजीतलालजी, अशोकभाई रायचंदजी, रणजीतभाई छोटालालजी, अशोककुमार छोटालालजी आदि ट्रस्टी गण ने पूज्यश्री को हार्दिक विनती की । प्रत्युत्तर में पूज्यश्री ने वडिल गुरु भगवंतों के आदेशानुसार श्री जैन संघ-पिण्डवाडा की विनती का सहर्ष स्वीकार किया । भद्रंकर परिवार एवं श्री उपधान तप आयोजक समिति द्वारा सभी ट्रस्टीगण का बहुमान किया गया । श्री जैन संघ-पिण्डवाडा की ओर से 50 रुपये की प्रभावना की गई ।

दि. 30 अक्टूबर को प्रात:9.30 बजे बारह व्रत स्वीकार एवं पुद्‌गल वोसिराने की क्रिया हुई ।

दि. 4 नवंबर के शुभदिन चौमासी चौदस के शुभ दिन प्रात: 9.15 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद 10.15 बजे सभी का सामुहिक चातुर्मासिक चौदस के देववंदन हुए ।

दि. 5 नवंबर को प्रात: 7.30 बजे सभी साधु-साध्वीजी के चातुर्मासिक परिवर्तन निमित्त सुपर स्टार बेन्ड की रमझट के साथ गाजते-बाजते **महेन्द्रभाई शेठ** के गृहांगण में पदार्पण हुआ । प्रारंभ में श्री शत्रुंजय महातीर्थ के पट्ट समक्ष सामुहिक चैत्यवंदन-5 स्तवन एवं 21 खमासमण आदि विधि विधान हुए । तत्पश्चात् श्री शत्रुंजय महातीर्थ के आलंबन से द्राविड और वारिवखीलजी के 10 करोड मुनियों के साथ मोक्षगमन की यथोगाथा गान पूर्वक पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । कार्यक्रम के पश्चात् शेठ परिवार की ओर से 50 रुपये का संघपूजन एवं पधारे हुए सभी महानुभावों की नवकारशी का लाभ लिया गया ।

दि. 7 नवंबर को प्रात: सूर्योदय के बाद उपधान तप के आराधकों का चतुर्मुख परमात्मा के समक्ष चैत्यस्तव के उपधान तप स्वरूप चोकिये में मंगल प्रवेश की विधि संपन्न हुई।

दि. 8 नवंबर को अध्यात्मयोगी नि:स्पृह शिरोमणि पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा. की 95 वीं दीक्षा तिथि** निमित्त प्रवचन दरम्यान गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ । राहुलभाई एवं गौतमजी मुर्डिया के गुरुभक्ति गीत के बाद **मु.श्री शालिभद्रविजयजी म.सा.** एवं पूज्य आचार्य भगवंत ने गुरु गुणानुवाद किये ।

दि. 9 नवंबर को प्रात: उत्तराध्ययन सूत्र के योगोद्वहन कर रहे **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी** की अनुज्ञा विधि संपन्न हुई ।

दि. 10 नवंबर को सिद्धांत महोदधि, कर्म साहित्य निष्णांत, पिण्डवाडा के नंदन **पूज्य आचार्य देव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. की 125 वीं दीक्षा तिथि** निमित्त गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ । राहुलभाई एवं राजकुमारजी बोलिया ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किये । गौतमजी मुर्डिया ने गुणानुवाद किये । फिर मुनिश्री शालिभद्रविजयजी एवं मु. श्री स्थूलभद्रविजयजी ने गुणानुवाद किये । अंत में पूज्य आचार्य भगवंत ने उनकी नि:स्पृहता आदि गुणों का वर्णन करते हुए गुणानुवाद किया ।

दि. 14 नवंबर को **अंतिम तीर्थंकर शासनपति श्री महावीर स्वामी भगवान के दीक्षा कल्याणक** निमित्त प्रवचन दरम्यान **दीक्षा कल्याणक की भावयात्रा** का कार्यक्रम हुआ । दीक्षा कल्याणक की भाववाही स्तुतिगान के बाद मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी एवं पूज्य आचार्य भगवंत ने प्रभु के दीक्षा कल्याणक का वर्णन किया ।

रत्नत्रयी बहुमान कार्यक्रम

दि. 16 नवंबर को प्रात: 9.30 बजे रत्नत्रयी बहुमान कार्यक्रम हुआ । उपधान तप के आयोजन में अपनी असार लक्ष्मी का दान देने वाले उदारदिल दाताओं के बहुमान स्वरुप-**दर्शन बहुमान,** पुस्तक विमोचन स्वरुप **ज्ञान बहुमान** एवं 47 दिनों तक पौषध व्रत में रहकर उपधान तप की आराधना करने वाले 24 आराधकों के मोक्षमाला के चढावे स्वरुप **चरित्र बहुमान** का भक्ति संगीतमय भव्य कार्यक्रम हुआ । चढावे हेतु जाजम बिछाने का चढावा 13,500 रुपये में अरविंदजी चौपडा, मुनिमजी–19,000 रुपये में जीवनसिंघजी सिंघटवाडिया, तिलक 21,006 रुपये में गौतमजी मुर्डिया, माला से बहुमान 8,001 रुपये में जतनकुमार गिरधारीलालजी, श्रीफल प्रदान 9,999 रुपये में नरेन्द्रजी सिंघवी, मोमेन्टो अर्पण 9,999 रुपये में कुलदीपजी नाहर एवं सोने की चेन अर्पण करने का चढावा 61,002 रुपये में गौतमजी मुर्डिया परिवार ने लिया । तत्पश्चात मोक्षमाला के चढावे हुए । प्रथम मोक्षमाला 7.51 लाख में **भोपालसिंह सिंघवी,** दूसरी 3.06 लाख में **मंजुबेन पोरवाल,** तीसरी 1.51 लाख में **अरविंदजी चौपडा,** चौथी 1.08 लाख में **मोहन सिंघजी पोरवाल,** पांचवीं 1.08 लाख में **विद्याजी जीवनसिंघजी** सिंघटवाडिया ने लिए । आगे की मालाएँ क्रमश: चढावे और नकरे में दी गई ।

तत्पश्चात् पूज्यश्री द्वारा संपादित **आओ प्राकृत सीखें भाग-2** का विमोचन महावीरजी रांका, शैलेन्द्रजी हिरण, भंवरलालजी तथा अंकितभाई मण्डलेशा द्वारा किया गया । अंत में उपधान तप आयोजन के दानदाता एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं का बहुमान हुआ । कार्यक्रम के बाद साधर्मिक भक्ति हुई ।

मोक्षमाला महोत्सव

दि. 18 नवंबर को प्रात: सूर्योदय के बाद उपधान तप आराधकों ने 47 दिन तक पौषध व्रत की आराधना पूर्ण हुई । सभी ने पौषध पारा । दोपहर को 3.00 बजे पद्मावती भक्ति मंडल की श्राविकाओं के द्वारा भव्य पंचकल्याणक पूजा पढाई गई ।

दि. 19 नवंबर को प्रात: 9.00 बजे भक्ति की रमझट के साथ विविध औषधियों के माध्यम से वर्धमान शक्रस्तव महाभिषेक का भव्य कार्यक्रम हुआ । अमदाबाद से पधारे **भव्यभाई शाह** ने भक्ति की रमझट मचाई । गुरु वंदनार्थ पधारे सुप्रसिद्ध संगीतकार **अनिलभाई गेमावत** ने भी सभी को भक्ति संगीत में जोडा । शक्रस्तव महाभिषेक का लाभ उपधान तप आराधक **मोहनसिंहजी पोरवाल परिवार** ने लिया । सभी आराधकों ने परमात्मा का अभिषेक किया । दोपहर स्वामीवात्सल्य के बाद 2.30 बजे बहनों की सांजी एवं महेन्दी का कार्यक्रम हुआ । कार्यक्रम का लाभ **अरुणाबेन** एवं **गौतमजी मुर्डिया** के उपधान तप अनुमोदनार्थ मुर्डिया परिवार द्वारा लिया गया ।

दि. 20 नवंबर को प्रभावक प्रवचनकार पूज्य **पंन्यास प्रवर श्री निरागरत्नविजयजी म.सा.** आदि ठाणा-3 भी पधारे । प्रात: नवकारशी के बाद 9.30 बजे भव्यातिभव्य मोक्षमाला का वरघोडा प्रारंभ हुआ । म्युजिकल बेन्ड, उपधान तप के 24 आराधकों की 12 बग्गियाँ, चांदी के नूतन रथ में 21 इंच के श्री महावीर स्वामी परमात्मा, शहनाई वादक एवं चतुर्विध संघ ने शासन की शोभा बढाई । 11.00 बजे वरघोडे की समाप्ति के बाद भद्रंकर प्रवचन मंडप में प्रभु भक्ति, पूज्य आचार्य भगवंत का प्रेरणादायी प्रवचन एवं कार्यकर्ताओं का बहुमान हुआ । कार्यक्रम के बाद सभी का स्वामिवात्सल्य हुआ ।

शाम को मंदिरजी में परमात्मा की भव्य आंगी, दीपक रोशनी, रंगोली, स्वरुप महापूजा का आयोजन गुरु भक्तों की ओर से हुआ ।

दि. 21 नवंबर को प्रात: 6.15 बजे उपधान तप आराधकों की श्रावक जीवन के उपयोगी सभी सूत्रों के

समुद्देश एवं अनुज्ञा विधि हुई । सकल श्री संघ की नवकारशी के बाद प्रात: 9.15 बजे मोक्षमाला का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ । प्रारंभ में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री निरागरत्नविजयजी म.सा. का प्रेरणादायी प्रासंगिक प्रवचन हुआ । फिर सभी **प्रथम उपधान** तप के आराधकों का तिलक, माला, श्रीफल, मोमेन्टों एवं **3 ग्राम सोने की चेन** से बहुमान हुआ ।

उपधान तप पूर्ण होने पर **दूसरे उपधान** आराधकों को **15,000 रुपये, तीसरे उपधान** आराधकों को **12,000 रुपये** एवं **अठारिया आराधकों** को **9,000 रुपये** की प्रभावना दी गई ।

तत्पश्चात् निश्रा दाता पूज्य गुरुभगवंतों का गुरुपूजन का चढावा 27,000 रुपये में **जसवंतसिंहजी तेजसिंहजी सुराणा परिवार** एवं कामली अर्पण का चढावा 51,000 रुपये में **मातुश्री कमलाबाई मूलचंदजी रुपावत परिवार** ने लिया । गुरुपूजन एवं कामली अर्पण के बाद छ'री पालित संघ निमित्त दो चढावे हुए । संघपति को तिलक एवं माला का चढावा 41,000 रुपये में **महेन्द्रकुमार तलेसरा** एवं श्रीफल तथा गन्ना प्रदान करने का चढावा 15,000 रुपये में **धरमचंदजी मुर्डिया** परिवार ने लिया ।

फिर शुभ मुहूर्त में मोक्षमाला परिधान शुरु हुआ । क्रमश: एक-एक आराधक गण अपने परिवार के साथ मंच पर आए । सभी को पूज्य आचार्य भगवंत ने मोक्षमाला पहनायी । कार्यक्रम लगभग 12 बजे तक चला । उदयपुर आदि क्षेत्रों से 1000 से अधिक लोगों की उपस्थिति रही । कार्यक्रम के बाद सभी की साधर्मिक भक्ति हुई ।

आराधना तप आयोजक समिति की ओर से श्री जैन श्वे. मू. संघ-मालदास स्ट्रीट-उदयपुर के साधारण खाते में 1 लाख रुपये भेट किये गये ।

प्रथम उपधान तप में अनेकविध आराधनाएँ

1. एक लाख नवकार मंत्र का जाप ।
2. 7000 बार लोगस्स सूत्र का स्मरण-ध्यान ।
3. हजारों पंचांग प्रणिपात खमासमणे ।
4. 1500 लगभग शक्रस्तव द्वारा प्रभु की स्तवना ।
5. 47 दिन तक पौषध व्रत द्वारा साधुता का आस्वाद ।
6. 21 उपवास, 10 आयंबिल, 16 नीवि की तपश्चर्या ।

इस प्रकार निरंतर तप द्वारा कर्मों का शोषण होता है । नश्वर शरीर में से आराधना का सार प्राप्त किया जाता है ।

प्रतिदिन सद्गुरु के मुख से प्रवचन श्रवण, वाचना ग्रहण एवं स्वाध्याय द्वारा सम्यग्ज्ञान की उपासना होती है ।

दिन भर विविध आराधनाओं में मग्नता के कारण संवर धर्म की पुष्टि होती है ।

उदयपुर शहर से दयालशा किल्ला छ'री पालक संघ

शुभ निश्रा

जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, परम पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5
प्रवचनकार **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री निरागरत्नविजयजी म.सा.** ठाणा-3
दीर्घ संयमी **पू.सा.श्री कीर्तिरेखाश्रीजी** की सुशिष्या
पू.सा.श्री अर्हद्रेखाश्रीजी आदि ठाणा-4

-: मुख्य संघपति :-

मातुश्री श्रीमती धाकुबेन एवं पिताश्री चुन्निलालजी रांका

की स्मृति में श्री खेताजी धन्नाजी परिवार **पुत्र-पुत्रवधु : बख्तावरजी-सुलोचनाबाई. जयंतीलालजी-चन्द्रकलाबाई, केवलचंदजी-लीलाबाई, महावीरजी-उषाबाई, पारसमलजी-लीलाबाई एवं समस्त रांका परिवार** निवासी : दादाई, उदयपुर, मुंबई.

-: सह संघपति :-

1) **विमलाबाई-प्रकाशमलजी,** मोहनत परिवार जोधपुर, हाल-उदयपुर

2) **स्व. श्रीमती कंचनबाई-मनोहरलालजी सिंघवी** की स्मृति में
श्री नरेन्द्रकुमारजी-स्नेहलता, श्री भोपालसिंह-निलिमा,
एवं समस्त सिंघवी परिवार-उदयपुर

-: संघपति :-

1) स्व. श्रीमती गणेशीबाई-बसन्तिलालजी सिंघवी,
2) लाडबेन पारसमल, कास्मा परिवार उदयपुर-नरोडा-अहमदाबाद
3) एक सद्गृहस्थ-उदयपुर
4) बलवन्तसिंह-विमलादेवी, पुत्री : डॉ. हेमलता बोलिया परिवार-उदयपुर
5) राजेन्द्रकुमारजी, तलेसरा, गरीमा, निलेश, दिविशा, भव्य बाफना-उदयपुर
6) स्व. कालुलालजी लेहरबाईजी, स्व. प्रतापसिंहजी-कुसुमलता सिंघवी-गोगुन्दा-उदयपुर
7) ऋषभलालजी, कल्पेशजी जैन-उदयपुर
8) उमरावबाई-तेजसिंहजी, स्नेहलता-जसवन्तसिंह, सुराणा परिवार-उदयपुर
9) श्रीमान बाबुलालजी-मंगलाजी, चन्द्रप्रकाश-प्रिति, बाफना-उदयपुर
10) प्रकाशचंदजी, नितेशजी, आरव सिंघटवाडिया, उदयपुर, बेंगलोर

तीर्थ-यात्रा कैसे हो ?

प्रवचनकार : मरुधररत्न पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

प्रवचन-1

एकाहारी भूसंस्तारकारी, पद्भ्यां चारी शुद्धसम्यक्त्वधारी ।
यात्राकाले सर्वसचित्तहारी, पुण्यात्मा स्यान् ब्रह्मचारी विवेकी ।।

चरम तीर्थपति देवाधिदेव भगवान महावीर परमात्मा के शासन के परमार्थ को पाये हुए किसी अज्ञात पूर्वाचार्य महर्षि ने हमें तीर्थयात्रा के संबंध में खूब सुंदर मार्गदर्शन दिया है ।

श्रावक जीवन में तीर्थ एवं तीर्थयात्रा की खूब-खूब महत्ता है, क्योंकि घर छोड़कर तीर्थभूमि में जब जाते हैं, तब वहाँ का वातावरण ही कुछ अलग होता है ।

घर में अर्थ और काम से केन्द्रित जीवन होता है, जबकि तीर्थ में त्याग और संयम की साधना होती है ।

साधु-जीवन में तीर्थयात्रा का इतना अधिक महत्त्व नहीं है, क्योंकि साधु स्वयं जंगमतीर्थ रूप है और उस जीवन में संयमयात्रा की प्रधानता है ।

साधु-जीवन में संयम के योगों को बाधा न आये, इसी ढंग से जीवन जीना होता है, इसलिए तीर्थयात्रा गौण है, संयमयात्रा प्रधान है, जबकि गृहस्थ का जीवन तो आरंभ-समारंभ में ही डूबा होता है, अतः उस जीवन में तीर्थयात्रा का खूब महत्त्व है ।

आजकल ट्रेन-बस का व्यवहार खूब हो गया है । जहाँ देखो वहाँ तीर्थों में भी हजारों यात्रिक नजर आते हैं । परंतु उस यात्रा का मुख्य उद्देश्य और तीर्थयात्रा की विधि लगभग भुला दी गई है ।

◆ तीर्थयात्रा का मुख्य उद्देश्य भवयात्रा का अंत लाने का है । भवयात्रा का अंत लाने के लिए वह यात्रा, भावयात्रा बननी चाहिए ।

भावयात्रा बिना भवयात्रा का अंत नहीं है । भवयात्रा अर्थात् भवभ्रमण तो खूब किया है, अब उसका अंत लाना है, अतः तीर्थयात्रा, तीर्थयात्रा के नियमपूर्वक होनी चाहिए ।

वर्तमान में लगभग तीर्थयात्रा के नियमों का श्रावकों को ज्ञान ही नहीं है तो कई लोग जान बूझकर भी उन नियमों के पालन की उपेक्षा कर रहे हैं ।

आज की तीर्थ यात्राएँ लगभग पर्यटन रूप बन गई हैं ।

पर्यटन केन्द्र अर्थात् घूमने-फिरने और मौज-मजा के स्थान !

कई लोग शारीरिक और मानसिक थकावट दूर करने के लिए जिस प्रकार पर्यटन केन्द्रों में घूमने के लिए जाते हैं, उसी प्रकार तीर्थों में भी घूमने के लिए जाते हैं । उनका उद्देश्य सिर्फ Relax पाना ही होता है ।

बहनें रसोईघर से कंटाल गई हों और भाई व्यापार-धंधे से कंटाल गए हों तो Relax पाने के लिए आस-पास के तीर्थों में चले जाते हैं, जहाँ हर प्रकार की सुख-सुविधा से युक्त धर्मशालाएँ हों, जहाँ खाने-पीने के लिए अच्छी भोजनशालाएँ हों अर्थात् होटल-रेस्टोरेंट आदि की सुविधाएँ हों ।

दुनिया भर की सुविधाएं जो घर में नहीं मिलती है, वह अब तीर्थस्थानों में मिलनी चालू हो गई है, अतः अब तीर्थस्थानों में जाने में कंटाला नहीं आता है, क्योंकि वहाँ हर प्रकार की सुख-सुविधाएँ मिल रही हैं। वास्तव में तो तीर्थयात्रा कष्टप्रद होनी चाहिए।

कष्ट सहन करने के बाद जब प्रभु मिलते हैं, तब उस प्रभु मिलन का आनंद कुछ और ही होता है। जैनों के अतिप्राचीन और मुख्य तीर्थ लगभग जंगल या पर्वत पर ही आये हुए हैं।

शत्रुंजय, गिरनार, सम्मेतशिखर, आबू और अष्टापद तीर्थ ये पाँच मुख्य तीर्थ कहलाते हैं, ये सभी तीर्थ पर्वत पर और काफी ऊँचाई पर आये हुए हैं, जहाँ भौतिक सुख-सामग्रियों का अभाव है। जैनों के कई तीर्थ जंगल में आये हुए हैं अर्थात् जहाँ लोक-बस्ती का अभाव है। जहाँ आवागमन के साधन कम हैं।

राता महावीरजी, मुछाला महावीर जी, दियाणा आदि कई तीर्थ ऐसे हैं, जहाँ बस्ती का सर्वथा अभाव है। जहाँ लोक बस्ती नहीं होने से मौज-मजा और सुख के साधनों का भी अभाव है। जहाँ होटलें नहीं हैं, रेस्टारेंट नहीं हैं, हाथ लॉरियाँ नहीं हैं।

प्रभुमिलन का सच्चा आनंद ही यही है कि हमें संसार के सभी भौतिक सुख नीरस लगें उन सुखों के प्रति दिल में थोड़ा भी आकर्षण भाव न रहे, क्योंकि वे सुख असली नहीं, बल्कि नकली हैं।

◆ ***दुःखों का सहर्ष स्वीकार किये बिना आत्मा का सच्चा सुख मिलता नहीं है, इसीलिए प्रभु की यात्रा कष्टप्रद है। सुखों को लात मारना और दुःखों को हँसते मुँह स्वीकार करना-यह प्रक्रिया जिसे मंजूर हो, वो ही प्रभु को पा सकता है।***

प्रभु ऊँचे-ऊँचे पर्वतों पर गादीनसीन हुए हैं। कारण?

वे अपने भक्तों को संदेश देना चाहते हैं कि मुझसे मिलना है तो भौतिक सुखों का राग छोड़ना होगा और दुःख को बड़े प्रेम से गले लगाना होगा।

पर्वत और जंगल में ही प्रभु के धाम हैं-क्योंकि वहाँ भौतिक सुखों की सामग्री नहीं है।

◆ **भौतिक सुखों से दूर भागनेवाला ही प्रभु को पा सकता है।**

बाह्य दुःखों को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करनेवाला ही प्रभु के नजदीक पहुँच सकता है।

यद्यपि तीर्थयात्रा में अनेकानेक नियमों का पालन करने का होता है-फिर भी मुख्यतया छह नियम बताए हैं-

1. एकाहारी :- एकाहारी अर्थात् दिन में एक बार आहार लेना।

यद्यपि आहार करना, यह आत्मा का स्वभाव नहीं है, वह तो अणाहारी है। सिद्ध भगवंत अनंत काल तक मुक्त-अवस्था में रहते हैं, परंतु उन्हें वहाँ लेश भी आहार की अपेक्षा नहीं रहती है।

आहार लेना-आत्मा का स्वभाव नहीं होने पर भी आश्चर्य है कि संसार ***में आत्मा अनादि काल से आहार ग्रहण करती आ रही है। आत्मा को सबसे अधिक आसक्ति आहार पर है। अन्य सभी सुख-सुविधाएँ वह छोड सकती है, परंतु आहार बिना नहीं रह सकती।***

परिस्थिति बड़ी विचित्र है-एक ओर आहार लेना आत्मा का स्वभाव नहीं है तो दूसरी ओर संसार में आहार ग्रहण किये बिना चलता नहीं है, अतः प्रभु ने आहार की आसक्ति को तोड़ने के लिए तप धर्म का विधान किया है।

मानव-शरीर के बिना मोक्षमार्ग की आराधना-साधना संभव नहीं है और इस शरीर को टिकाने के लिए शरीर को आहार देना भी जरूरी है ।

छ'री पालक संघ में `एकासने' का विधान इस दृष्टि से खूब महत्त्वपूर्ण है । एकासने के माध्यम से शरीर को भाड़ा भी मिल जाता है और फिर इस शरीर द्वारा विहार-प्रतिक्रमण आदि की साधना कर शरीर को दिये भाड़े का कस भी निकाला जा सकता है ।

एकासने में शरीर को एक ही बार आहार दिया जाता है, अतः बार बार खाने की आदत भी छूट जाती है । बार-बार खाना यह भी साधक के लिए उचित नहीं है । ठीक ही कहा है-

'योगी खाए एक बार, भोगी खाए दो बार और रोगी खाए बारबार ।'

बार-बार खाना यह तो रोगीपने की निशानी है । तीर्थयात्रा मुख्यतया प्रभु से संबंध जोड़ने के लिए है । जिसकी बार-बार खाने की आदत होती है, उसका बहुत सारा समय आहार के पीछे ही चला जाता है । फिर प्रभु के साथ कैसे संबंध जुड़ेगा ?

◆ एकासने के तप के साथ ही रात्रिभोजन तथा अभक्ष्य भक्षण के पाप स्वतः बंद हो जाते हैं ।

यात्रा दरम्यान दिन में एक ही बार भोजन करने से व्यक्ति प्रभु भक्ति में स्थिरतापूर्वक बैठ सकता है ।

◆ शक्य हो तो किसी प्राचीन तीर्थ में पहली बार जाएँ तब अट्ठम-उपवास या आयंबिल का तप करना चाहिए, परंतु इतना शक्य न हो तो कम से कम एकासने का तप तो अवश्य होना ही चाहिए ।

जो रसना का गुलाम है, जिसे बार-बार खाने की आदत है, भक्ष्य-अभक्ष्य का जिसे विवेक नहीं है, ऐसा व्यक्ति तीर्थयात्रा के लिए भी जाएगा तो उसका अधिकांश समय आहार के इर्दगिर्द ही बीत जाता है । जीवन को टिकाने के लिए आहार तो एक मात्र साधन है, परंतु जो खाने-पीने का शौकीन है, स्वाद में आसक्त है, उसका अधिकांश समय आहार की चर्चा में, आहार की पसंदगी-नापसंदगी में ही चला जाता है ।

◆ जिस प्रकार शादी के प्रसंग में बराती को सिर्फ भोजन की सामग्री से मतलब होता है, उसी प्रकार कई लोग जाते हैं-तीर्थयात्रा के लिए, परंतु वहाँ पर भी उनकी चर्चाएँ भोजन के संदर्भ में ही होती हैं । ऐसे व्यक्ति ``संघ में खाने-पीने की व्यवस्था अच्छी रहे तो कहेंगे- संघ में खूब मजा आ गया ।''

`आहार'-तीर्थयात्रा का साधन होना चाहिए-इसके बजाय कई लोग तीर्थयात्रा में भी `भगवान' के बजाय आहार को ही प्रधान बना देते हैं ।

सचमुच, ऐसे व्यक्ति तीर्थयात्रा के वास्तविक फल को हार जाते हैं ।

तीर्थयात्रा तो प्रभु के साथ नाता रिश्ता जोड़ने के लिए है ।

2. भूमिसंस्थारी :- शरीर की सुखशीलता ब्रह्मचर्य पालन में बाधक है । शरीर को जितनी सुख-सुविधाएँ देंगे उतना ही ब्रह्मचर्य पालन कठिन होता है । उठने, बैठने व सोने में गद्दी तकिये का उपयोग, स्वादिष्ट और मसालेदार भोजन, अच्छे-रंगीन और आकर्षक वेशभूषा, सौंदर्य-प्रसाधन साधनों का प्रयोग, ठंडे जल से स्नान आदि ब्रह्मचर्य के दुश्मन हैं ।

तीर्थयात्रा के माध्यम से हम दुनिया के साथ नाता तोड़ते हैं और प्रभु के साथ नाता जोड़ते हैं ।

प्रभु के साथ नाता जोड़ना हो तो भौतिक सुख एवं सुख के साधनों से नाता तोड़ना ही होगा और बाह्य कष्टों से नाता जोड़ना ही होगा ।

◆ तारक तीर्थंकर परमात्माओं का इतिहास देखो, उन्होंने भी कर्मक्षय के लिए-मुक्तिसुख पाने के लिए सभी प्रकार के सांसारिक, भौतिक सुखों का त्याग किया था और जंगल में जाकर ठंडी-गर्मी, भूख-प्यास आदि के भयंकर कष्ट प्रसन्नतापूर्वक सहन किये थे ।

हम भी उनके अनुयायी हैं तो हमें भी उनका मार्ग पसंद होना ही चाहिए । उन्हीं के बताये मार्ग का अनुसरण करके ही हम मुक्तिसुख पा सकते हैं ।

छद्मस्थकाल में उन तारक परमात्माओं के जीवन में लेश भी प्रमाद नहीं था ।

◆ 1000 वर्ष के छद्मस्थ पर्याय में ऋषभदेव प्रभु कभी जमीन पर पालथी लगाकर बैठे नहीं हैं । 1000 वर्ष में उनका प्रमादकाल एक मात्र अहोरात्र प्रमाण ही है ।

◆ भगवान महावीर प्रभु का छद्मस्थकाल 12½ वर्ष था । उस अवधि में वे कभी जमीन पर बैठे या सोए नहीं हैं । कायोत्सर्ग ध्यान में खड़े रहकर ही उन्होंने कठोरतम साधना की है ।

कष्ट सहन किये बिना जब प्रभु वीर का मोक्ष नहीं हुआ तो हमारा मोक्ष कैसे हो जाएगा ?

आप लोग तीर्थयात्रा के लिए निकले हैं तो कम-से-कम इतने दिनों के लिए तो सुखशीलता का त्याग करें । छ'री के नियमों का अवश्य पालन करें । शयन के लिए संथारे का उपयोग करें ।

कई लोग शिकायत करते हैं-कि जमीन उबड़-खाबड़ या कठोर होती है-कैसे सोएँ ? रात को नींद नहीं आती है ।

अपनी भूतकाल की स्थिति को याद करें, जिस दिन इस दुनिया में आए उसके पहले की स्थिति । नौ मास तक माँ के गर्भ में रहे । वहाँ की स्थिति कैसी थी ?

उलटे मस्तक नौ मास तक ! कितनी छोटी जगह ! अंधकारयुक्त कैसी जगह !

लेकिन उस स्थिति को भी हमने प्रसार किया है । ज्ञानी तो कहते हैं- ***'इस संसार में ऐसा कोई कष्ट नहीं है, जिसे हमारी आत्मा ने अनंतबार सहन नहीं किया हो ।'***

इस जीवन में जो भी कष्ट आता है, वह नया लगता है । असह्य लगता है । मानों हर बार ऐसा ही लगता है कि यह कष्ट तो मुझसे बिल्कुल सहन नहीं होगा ।

अपनी आत्मा ने संसार के सुख को पाने की लालसा से आज तक भूतकाल में जितना कष्ट सहन किया है, उसका अनंतवाँ भाग भी यदि मोक्ष सुख पाने के ध्येय से सहन किया होता तो आज हमारा स्थान यहाँ पर नहीं, बल्कि सिद्धशिला पर ही होता ।

गत जन्मों की तो बात छोड़ो, इस जन्म में भी रोग आदि के कारण हमारी आत्मा ने जो कष्ट सहन किए हैं, उन्हें भी हम बिल्कुल भूल गए हैं ।

सहन करने का थोड़ा-थोड़ा अभ्यास किया जाय तो भारी कष्ट भी आसानी से सहन कर सकेंगे-परंतु हम तो थोड़े दुःख से ही घबराते हैं ।

थोड़ा भी दुःख आया और दुर्ध्यान करने लग जाते हैं ।

आवश्यकता है मन को मजबूत बनाने की । दृढ़ मनोबल होगा तो सब कुछ सहन कर पाएंगे ।

संघ के 10 दिन तो बात करते पूरे हो जाएंगे, परंतु सहन करने की थोड़ी आदत डालोगे तो भविष्य में आनेवाले बड़े कष्ट भी हँसते-हँसते सहन कर पाएंगे।

साधु जीवन की ओर नजर करें। आज भी साधु-साध्वी रात्रि में संथारे पर ही शयन करते हैं।

◆ ***संथारे पर सोने में काया को थोड़ा कष्ट होता है। जिन शारीरिक कष्टप्रद आराधना-साधनाओं को मन प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करता है, वह भी एक प्रकार का बाह्य-तप हो जाता है।***

बाह्य तप का पाँचवाँ भेद है-कायक्लेश।

3. पाद विहारी :- तारक परमात्मा ने आत्म-कल्याण के लिए जो उत्कृष्ट साधु जीवन बताया है, उस जीवन में तो सदा के लिए पैदल ही विहार करने की आज्ञा है।

वर्षों पूर्व की घटना है।

M.P. में हमारा विहार चल रहा था। इंदौर की ओर हमारा विहार था। 5 k.m. चलने के बाद सड़क के दोनों ओर जगह-जगह मकान दिखाई देने लगे। उस समय एक स्कूटरवाला पास में से गुजर रहा था-उसने स्कूटर रोका-हाथ जोड़कर प्रणाम किया-तब मैंने उससे पूछा– यहाँ से शांतिनगर कितना दूर है ? उसने कहा, महाराज ! बहुत दूर है।

मैंने कहा। बहुत कितना ?

उसने कहा, ``महाराज ! यहाँ से शांतिनगर 10 km. है, आप बैठ जाइए-अभी मैं आपको पहुँचा देता हूँ।''

उसके स्कूटर की पीछे की सीट खाली थी-उसकी यह बात सुनकर मैंने कहा, ``मुझे स्कूटर पर नहीं बैठना है, मैंने तो सिर्फ जानने के लिए ही पूछा है।''

उसने कहा, ``महाराज ! आप पैदल कब तक चलोगे ?''

मैंने कहा, ``हमें तो जिंदगीभर पैदल ही चलना है।'' यह सुनकर वह नतमस्तक हो गया। रॉकेट और प्लेन के युग में आज व्यक्ति सुबह का नाश्ता दिल्ली में लेता हैं, दोपहर का भोजन लंदन में और शाम का न्यूयार्क में।

एक ही दिन में हजारों km की दूरी पार करने के साधन उपलब्ध होने पर भी आज के युग में आप लोगों को पाद विहार की बातें करना शायद अटपटा लग सकता है।

परंतु वीतराग परमात्मा के सिद्धांत तो त्रिकाल-अबाधित हैं। समय बदलता रहेगा परंतु जैन सिद्धांत नहीं बदलेंगे।

2500 वर्ष पूर्व भी जैन साधु पैदल ही विहार करते थे और इतने वर्षों के बाद भी पैदल ही विहार करते हैं। भविष्य में भी मुक्तिमार्ग के साधक मुनिवर तो पैदल ही विहार करेंगे।

समय के परिवर्तन के साथ बहुत कुछ बदलता रहता है-परंतु जैन सिद्धांत नहीं बदलते हैं।

प्रभु ने साधु को एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिए पादविहार-पैदल विहार का मार्ग बताया है, जिसके अनेक फायदे हैं-

1. कहीं भी जाने के लिए जब आप वाहन का प्रयोग करते हैं, तो उसमें अनेक जीवों की हिंसा होती है, जबकि पाद विहार में जीवदया का पालन होता है।

2. ***शारीरिक स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए आहार-श्रम और निद्रा - तीनों का संतुलन जरूरी है । पैदल विहार से शरीर को थोड़ा कष्ट भी पड़ता है-जो शारीरिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है ।***
3. निरंतर बैठे रहने से शरीर के अवयवों में जडता पैदा होती है, जबकि पाद विहार करने से शरीर के सभी अवयवों में स्फूर्ति रहती है ।
4. कई लोग आरोग्य प्राप्ति के लिए डॉक्टर के कहने से Morning Walk करते हैं, जबकि पैदल विहार में Morning Walk स्वतः हो जाती है ।
5. एक्युप्रेसर चिकित्सा पद्धति में सभी प्रकार के रोगों के इलाज के लिए हाथ-पाँव के Points दबाये जाते हैं । खुले पाँव पैदल विहार में सारे Points स्वतः दब जाते हैं अतः आरोग्य पाने के लिए डॉक्टर की अन्य गोलियाँ नहीं खानी पड़ती हैं ।
6. स्कूटर-बस-गाड़ी आदि लगभग सभी वाहन पेट्रोल के आधार पर ही चलते हैं पेट्रोल के धुँए से भयंकर प्रदूषण बढ़ता है, जबकि पैदल विहार में लेश भी प्रदूषण नहीं है ।
7. वाहनों के Accident में मौत की ही भेंट मिलती है । पैदल चलनेवाले को Accident की संभावना कम रहती है ।
8. बस, ट्रेन आदि जहां से प्रसार होती हैं, वहाँ आवाज का भी प्रदूषण होता है । पाद विहार में आवाज का लेश भी प्रदूषण नहीं है ।
9. बस या ट्रेन की यात्रा में एक साथ सैकड़ों मील की दूरी पार होती है । बीच मार्ग में आनेवाले तीर्थों व गाँवों के मंदिरों के दर्शन छूट जाते हैं- जब कि पैदल विहार में मर्यादित दूरी पर ही पड़ाव होने से मार्ग के सभी जिनमंदिरों के दर्शन-वंदन-पूजा-भक्ति का लाभ मिल सकता है ।
10. पैदल विहार में जंगम तीर्थ समान गुरु भगवंत सामने से विहार करके आ रहे होते हैं, उनके भी दर्शन-वंदन, औचित्य-पालन या भक्ति का लाभ मिल सकता है ।

सामने से गुरु भगवंत-साधु-साध्वी आदि विहार कर आ रहे हो और आप ट्रेन या बस में हों तो वहाँ कहाँ रुकोगे ?

11. पाद विहार में जंगम तीर्थ समान गुरु भगवंत भी साथ में विहार करते हैं, अतः उनकी आचार संहिता, जीवदयापालन आदि का प्रत्यक्ष दर्शन होता है ।
12. तीर्थयात्रा दरम्यान पादविहार करने से कष्ट सहन करने का अभ्यास होता है । जिसने कष्टों को सहन करने का अभ्यास किया हो, वो ही कष्टों में अपनी चित्त-प्रसन्नता बनाए रख सकता है । बाकी तो थोड़े से कष्टों से भी व्यक्ति आकुल-व्याकुल हो जाता है और चित्त दुर्ध्यानग्रस्त बन जाता है ।

4. सम्यक्त्वधारी (आवश्यककारी) :- आजकल ट्रेन व बस से यात्रा खूब सरल और सस्ती हो गई है ।

अहमदाबाद या मुंबई से एक ही दिन में व्यक्ति पालीताणा की यात्रा कर घर लौट जाता है ।

◆ एक भाई मुंबई से Plane में भावनगर गये-वहाँ से टैक्सी द्वारा पालीताणा गये । डोली से दादा की यात्रा कर शाम तक वे भाई मुंबई भी पहुँच गये ।

मुंबई पहुँचने पर किसी ने पूछा, ``कहाँ जाकर आए ?''

उसने कहा, ``पालीताणा यात्रा करके आया हूँ ।''

``क्या दादा के मस्तक पर मुकुट था ?''

``यह तो पता नहीं है ।''

कहने का मन हो जाता है, ``तुम यात्रा करके आए या तुम्हारा (पार्सल) ।''

तीर्थभूमियों में भी अयोग्य और अपात्र व्यक्तियों के आगमन से वहाँ की पवित्रता नष्ट होती है। तीर्थों में जाकर भी जो अब्रह्म का सेवन करते हैं, जुआ खेलते हैं, होटल आदि में भोजन-नाश्ता करते हैं । ताश खेलकर समय प्रसार करते हैं । इधर-उधर की निंदा करते हैं । रात्रिभोजन करते हैं । कोल्डड्रिंक्स-बर्फ-आईस्क्रीम आदि खाते-पीते हैं । उद्भट-फैशनेबल वेष धारण करते हैं । सिर्फ घूमने के लिए आए ऐसे व्यक्ति तीर्थों की पवित्रता को धक्का ही पहुँचाते हैं ।

आजकल प्रायः यात्रा-प्रवास में तीर्थों के साथ घूमने के स्थान और अजैनों के प्रसिद्ध स्थान कुलुमनाली - आदि को भी जोड़ा जाता है ।

अरिहंत परमात्मा के यथार्थ स्वरूप के बोध बिना अरिहंत परमात्मा के प्रति सच्चा आदर भाव पैदा नहीं होता है । अरिहंत परमात्मा की सच्ची पहिचान नहीं होने के कारण ही जीवात्मा को इधर-उधर, जहाँ-तहाँ भटकने का मन होता है ।

ठीक ही कहा है- **'जिनभक्ते जे नवि थयु रे, ते बीजाथी केम थाय ?'**

जिनेश्वर की भक्ति से जो नहीं होता हो, वह अन्य किसी भी उपाय से संभव नहीं है ।

तीर्थंकर परमात्मा की विशेष प्रकार से भक्ति करने के लिए ही घर छोड़कर तीर्थ में जाने का है । घर में सांसारिक प्रवृत्तियों की व्यस्तता के कारण प्रभुभक्ति के लिए विशेष समय नहीं निकाल पाते हैं अथवा घर में अन्य-अन्य प्रवृत्तियाँ होने से मन इधर-उधर भटक जाता है, जबकि तीर्थस्थान में तो एक ही लक्ष्य होने से अन्य सभी प्रवृत्तियों का त्याग हो जाता है ।

जिसप्रकार व्यापारी की सभी प्रवृत्तियाँ पैसे को केन्द्र में रखकर होती हैं, वह कुछ भी प्रवृत्ति करता हो, उसका लक्ष्य तो पैसा कमाना ही होता है, उसी प्रकार छ'री पालक संघ यात्रा दरम्यान अपनी सारी प्रवृत्तियाँ देव-गुरु को केन्द्र में रखकर होनी चाहिए ।

दिनभर की सभी प्रवृत्तियाँ देव और गुरु की आराधना-भक्ति रूप ही होती हैं ।

वीतराग देव ही मेरे परमात्मा हैं, निर्ग्रंथ गुरु ही मेरे उपकारी गुरु है और वीतराग परमात्मा द्वारा निर्दिष्ट धर्म ही सच्चा धर्म हैं, ऐसी दृढश्रद्धा तीर्थ यात्रिक के दिल में अवश्य होनी चाहिये । जिसका सम्यक्त्व शुद्ध है, उसी की तीर्थ यात्रा भवयात्रा का अंत करानेवाली होती है, अतः यात्रा दरम्यान अपना सम्यक्त्व मलिन न बने इस हेतु पूरी पूरी सावधानी और प्रतिदिन करने योग्य छ आवश्यकों का पालन स्वरुप प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये ।

देव और गुरु के सान्निध्य-संपर्क से अपना सम्यक्त्व निर्मल बनता है ।

5. सचित्तपरिहारी :- कच्चा पानी, कच्ची सब्जियाँ एवं जिन फलों को बीज और छाल से अलग कर 48 मिनीट ना रखे गए हो ऐसे पदार्थ सचित्त माने जाते है । सचित्त पदार्थ काम वर्धक होने से एकासना आदि तपश्चर्याओं में इन का त्याग अनिवार्य होता है ।

6. ब्रह्मचारी :- साधु के पाँच महाव्रतों में सबसे अधिक महत्त्व ब्रह्मचर्य व्रत का ही है । अन्य सभी व्रतों में अपवाद बताए हैं, परंतु इस व्रत में कहीं कोई अपवाद नहीं है । इस व्रत के भंग में साधुता का ही भंग कहलाता है । श्रावक जीवन में भी इस व्रत की खूब महिमा है ।

जिस गृहस्थ ने आजीवन चतुर्थव्रत को स्वीकार किया हो, उसकी आधी दीक्षा ही मानी जाती है । उसने अपने आधे संसार को पार कर दिया है ।

श्रावक के जीवन में यह मनोरथ हमेशा होना चाहिए-**''मेरे जीवन में वह स्वर्णिम दिन कब आएगा, जब मैं आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार करूंगा ।''**

ब्रह्म अर्थात् आत्मा । आत्मा में रमण करना, उसी का नाम ब्रह्मचर्य है ।

अब्रह्मसेवन से होनेवाला सुख पराधीन, क्षणिक और पाप का बंध करानेवाला हैं जबकि ब्रह्मचर्य-पालन से जिस आत्मिक सुख की अनुभूति होती है, वह सुख स्वाधीन, वास्तविक और पुण्यबंध व कर्मनिर्जरा करानेवाला है । छ'री पालक संघ का मुख्य उद्देश्य भौतिक सुखों का त्याग और आत्मिक सुखों का स्वीकार है । आत्मिक सुख पाने के लिए ब्रह्मचर्य की साधना खूब जरूरी है ।

छ'री पालक यात्रा दरम्यान मन, वचन और काया से निर्मल ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए । पुरुष को मोम तो स्त्री को अग्नि की उपमा दी गई है । जिस प्रकार अग्नि के संपर्क से मोम पिघलने लगता है , उसी प्रकार स्त्री के संपर्क से पुरुष की मनोवृत्ति कामातुर बनती है, अतः यात्रा दरम्यान विजातीय संपर्क से दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिए ।

ठीक ही कहा है-

'देव दाणव गंधव्वा, जक्ख रक्खस किन्नरा । बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति ते ।।

जो मनुष्य दुष्कर ऐसे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, उन्हें देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस और किन्नर भी नमस्कार करते हैं ।

- ब्रह्मचर्य के पालनपूर्वक जो मंत्रजाप और आराधना-साधना की जाती है, वह शीघ्र फलदायी होती है ।
- ब्रह्मचारी मनुष्य को देवता भी नमन करते हैं, अतः छ'री पालक संघ यात्रा दरम्यान इस व्रत का दृढ़ता पूर्वक पालन करना चाहिए ।

प्रवचन-2

तीर्थयात्रा में विवेक

प्रवचनकार : प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरिजी म.सा.

भारत की भूमि का यह परम सौभाग्य है कि इस देश की पावन धरा पर चौबीस जिनेश्वर भगवंतों के जन्म आदि पांच कल्याणक हुए हैं । वे कल्याणक भूमियाँ भी तीर्थ स्वरूप हैं । उन भूमियों पर आए हुए जिनालय भी तीर्थ स्वरूप हैं । शाश्वत गिरिराज को छोड अन्य सभी तीर्थ अशाश्वत हैं ।

वर्तमान समय में भी नये-नये अनेक तीर्थों का निर्माण कार्य जारी है। तो उन तीर्थों में यात्रिकों की संख्या में भी खूब-खूब वृद्धि हुई है-परंतु वह वृद्धि तीर्थयात्रा के बजाय घूमने के साधन के रूप में हुई है।

तीर्थ यात्राएँ बढ़ रही हैं तो साथ में आशातनाएँ भी खूब बढ़ गई हैं।

- ***तीर्थों में सुविधाएँ बढ़ी हैं तो साथ में सुविधाओं का दुरुपयोग भी बढ़ गया है।***
- ***तीर्थों में आकर भी जो लोग घोर आशातनाएँ कर रहे हैं, उन लोगों के लिए तीर्थ तारक नहीं बल्कि मारक ही बनते हैं।***

तीर्थ यात्रा में सावधानियाँ :-

1. **यात्रा के लिए घर से प्रयाण करते समय 12 नवकार का स्मरण करना चाहिए।**
2. यात्रा दरम्यान किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए।
3. **तीर्थ यात्रा दरम्यान स्वद्रव्य से प्रभुजी की पूजा-भक्ति के लिए धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आदि वस्तुएँ अपने घर से लेकर जाना चाहिए।**
4. शक्य हो तो तीर्थयात्रा दरम्यान सभी जिनबिंबों की पूजा करनी चाहिए।
5. **यथाशक्ति चढ़ावा बोलकर प्रभु की अंगपूजा, आरती, मंगलदीप आदि का लाभ लेना चाहिए।**
6. संध्या समय सामूहिक स्तुतिगान, चैत्यवंदन, जाप, ध्यान आदि द्वारा प्रभु की खूब भक्ति करनी चाहिए। कुछ समय तक स्थिर नजर से प्रभु का दर्शन व ध्यान करना चाहिए।
7. **तीर्थ प्राचीन हो तो उसके इतिहास को भी जानना चाहिए-इससे तीर्थ के प्रति आदर भाव-पूज्य भाव बढ़ता है।**
8. **तीर्थ में कोई आशातना आदि का ख्याल आए तो उसकी उपेक्षा न करें। उसे दूर करने का समुचित प्रयत्न करना चाहिए।**
9. तीर्थ के स्टाफ आदि के साथ मृदु व्यवहार करना चाहिए।
10. **धर्मशाला में लाइट-पंखा आदि का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जरूरत न हो तो जयणा (यतना) कर देनी चाहिए।**
11. तीर्थयात्रा भागते-भागते नहीं करनी चाहिए। एक दिन में दो-चार तीर्थ या मंदिरों के बजाय एक ही तीर्थ में खूब शांति से प्रभुभक्ति करनी चाहिए।
12. **तीर्थयात्रा दरम्यान ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।**
13. तरुण कन्या एवं युवतियों को मर्यादापूर्वक वेष पहिनना चाहिए। अपने उद्भट वेष से किसी का मानसिक पतन न हो, इसका पूरा-पूरा ख्याल रखना चाहिए।
14. **तीर्थयात्रा प्रभुदर्शन के लिए है, न कि अपने रूप या अंगोपांग के प्रदर्शन के लिए। तीर्थयात्रा भवयात्रा का कारण न बने, इस हेतु वस्त्र परिधान में पूरा पूरा विवेक रखना चाहिए।**
15. तीर्थयात्रा संसार-सागर को तैरने के लिए है, डूबने के लिए नहीं। अतः तीर्थयात्रा दरम्यान आशातनाओं से बचना चाहिए।

ठीक ही कहा है—``**तीरथनी आशातना नवि करीए, नवि करीए रे नवि करीए।**
आशातना करतां थकां धन हानि, भूख्या न मले अन्नपाणी,

काया वली रोगे भराणी आ भवमां एम. तीरथनी.
परभव परमाधामी ने वश पडशे, वैतरणी नदीमां मलशे,
अग्नि ने कुंडे बलशे, नवि शरणुं कोय, तीरथनी...।''

अर्थ :- तीर्थ की आशातना नहीं करनी चाहिए । तीर्थ की आशातना करने से धन की हानि होती है, आगामी भव में अन्न-जल की प्राप्ति दुर्लभ होती है, काया में अनेक रोग पैदा होते हैं ।

तीर्थ की आशातना के फलस्वरुप जीव मरकर नरक में जाता है, जहाँ परमाधामी कृत भयंकर वेदनाएँ सहन करनी पड़ती हैं ।

19. कहा भी है- **``अन्यस्थाने कृतं पापं, तीर्थ-स्थाने विनश्यति ।**
तीर्थस्थाने कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति ।।''

तीर्थस्थान में प्रभु की भक्ति करने से अन्यस्थान में बँधे हुए पापों का नाश हो जाता है, जबकि तीर्थस्थान में बँधे हुए पाप वज्रलेप की तरह खूब मजबूत हो जाते हैं, जिनकी सजा जीवात्मा को अवश्य भुगतनी पड़ती है ।

अतः ऐसे पवित्र तीर्थों की यात्रा करते समय यह बात ध्यान में रखें, ``यहाँ घूमने-फिरने के लिए या मौज-मजा के लिए नहीं आए हैं । यह कोई हिल स्टेशन नहीं है, यहाँ तो मुझे अपने कर्मों का नाश करना है'', यदि यह बात लक्ष्य में हो तो व्यक्ति अनेक पापों से बच सकता है ।

20. **तीर्थस्थानों में रात्रिभोजन तथा कंदमूल आदि सभी प्रकार के अभक्ष्य पदार्थों का सर्वथा त्याग होना चाहिए ।**

21. शक्य हो तो तीर्थों में उपवास, आयंबिल, एकासना आदि का पच्चक्खाण करना चाहिए, ताकि परमात्म-भक्ति के लिए अधिकतम समय निकाला जा सके ।

22. **तीर्थों में दर्शन-पूजा आदि में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए । बल्कि खूब शांति व स्थिरचित्त से पूजा करनी चाहिए ।**

23. तीर्थ के मूलनायक आदि जिनबिंबों की छबी अपने चित्त पर स्थापित हो जानी चाहिए । तीर्थयात्रा के बाद भी उसकी पुनः पुनः स्मृति कर बारबार उसकी अनुमोदना करनी चाहिए ।

24. तीर्थ के उद्धार, जीर्णोद्धार व विकास आदि में अपनी शक्ति अनुसार अवश्य सद्व्यय करना चाहिए । **सात क्षेत्रों की भक्ति में किया गया खर्च वास्तव में खर्च नहीं है, बल्कि वह निधि स्थायीनिधि बनती है ।**

जगड़ श्रावक की तीर्थ भक्ति

◆ कुमारपाल महाराजा छ'री पालित संघ के साथ शत्रुंजय पधारे ! वहाँ दादा के दरबार में तीर्थमाला व चढ़ावा बोला जा रहा था, उस समय महुवा के जगड़ श्रावक ने सवा करोड़ का चढ़ावा बोला । जगड़ के बाह्य परिवेष को देख लोगों के मन में शंका पैदा हुई कि क्या यह गरीब जैसा दिखाई देने वाला व्यक्ति सवा करोड़ रुपए चुका सकेगा ? और उसी समय जगड़ ने अपने उत्तरीय वस्त्र के एक छोर पर बँधा हुआ माणिक्य निकालकर कुमारपाल को अर्पित किया, जिसकी कीमत सवा करोड़ रु. थी । सभी के आश्चर्य का पार न रहा ।

उस माणिक्य-प्राप्ति का रहस्य पूछने पर जगड़ ने कहा, ``मृत्यु के पूर्व मेरे पिताजी ने मुझे पाँच माणिक्य दिये थे। उन्होंने कहा था-``एक माणिक्य से शत्रुंजय तीर्थ की भक्ति करना, एक माणिक्य से गिरनार के नेमिनाथ दादा की भक्ति करना, एक माणिक्य से चंद्रप्रभास पाटण के चंद्रप्रभु की भक्ति करना व दो माणिक्य तू रखना।''

अपने पिता की आज्ञानुसार मैंने तीनों माणिक्य तीन तीर्थों में चढ़ाए और मेरे भाग में जो दो माणिक्य थे, उनमें से एक आज तीर्थमाला के लिए बोल रहा हूँ। जगड़ श्रावक की इस उदारता व प्रभु-भक्ति को देखकर सभी भावविभोर हो गए।

कुमारपाल की तीर्थ यात्रा

पाटण में तीर्थ-यात्रा की जोरशोर से तैयारियाँ प्रारंभ हुईं। तीर्थयात्रा के लिए प्रयाण का मुहूर्त बिल्कुल निकट आ चुका था। उस समय गुप्तचरों द्वारा कुमारपाल को समाचार मिले कि राजा कर्ण अपने विशाल सैन्य के साथ गुजरात पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है।

समाचार सुनकर कुमारपाल दुविधा में फँस गए। ऐसे संयोगों में क्या किया जाय ? यद्यपि कुमारपाल कर्ण से मुकाबला करने में पूर्णतया सक्षम थे, उन्हें कर्ण का कोई भय नहीं था, परंतु कर्ण, कुमारपाल की इस तीर्थयात्रा का गैरलाभ उठाना चाहता था। कुमारपाल की गैरहाजरी में गुजरात पर आक्रमण करके गुजरात पर कब्जा किया जा सकता था, इस मैली मुराद से वह तीर्थयात्रा के प्रयाण के समय ही गुजरात पर हमला करने के लिए आ रहा था।

वाग्भट्ट मंत्री के साथ कुमारपाल अपने गुरुदेव के सामने उपस्थित हुए और उन्होंने इस आपत्ति में से बचने के लिए गुरुदेव से योग्य सलाह मांगी। थोड़ी देर आँखें मूंदकर गुरुदेव ने कहा, ``कुमारपाल ! तुम निश्चिंत रहो। प्रयाण की मुहूर्तवेला में ही तुम्हें शत्रुंजय की यात्रा के लिए प्रस्थान कर देना होगा। तुम कर्ण की चिंता छोड़ दो।''

कुमारपाल को अपने गुरुदेव के वचन पर पूर्ण विश्वास था। उसने तीर्थयात्रा के लिए अपनी पूरी तैयारी कर दी। तीर्थयात्रा के प्रयाण के एक दिन पूर्व ही गुप्तचर ने आकर समाचार दिये कि कर्णदेव की मृत्यु हो चुकी है।

राजा ने पूछा, ``कैसे ?''

गुप्तचर ने कहा, ``कर्णदेव हाथी पर बैठकर गुजरात की ओर आ रहा था। रात्रि का समय होने से उसे नींद आ रही थी। तभी दुर्भाग्य से उसके गले में रहा हार, वृक्ष की किसी डाल में फँस गया और वह हार ही उसके लिए फाँसी का फंदा बन गया। कर्णदेव की जंगल में ही मृत्यु हो गई।

कर्णदेव की मृत्यु को जानकर उसका सैन्य भी हताश हो गया। वह सैन्य वापस लौट गया।

सभी के आश्चर्य का पार न रहा।

उसने पूर्व निर्धारित मुहूर्त में ही शत्रुंजय की यात्रा के लिए प्रयाण किया।

वस्तुपाल की संघ भक्ति

आज से लगभग 800 वर्ष पूर्व नागोर (नागपुर) से पुनड श्रेष्ठी ने शत्रुंजय महातीर्थ का छ'री पालक संघ निकाला था। वह संघ दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ता हुआ धोलका नगर के नजदीक पहुँचा।

धोलका के महामंत्री वस्तुपाल को जब संघ के आगमन के समाचार मिले तो उनका हृदय खुशी से झूम उठा ।

संघ के विहार क्रम में धोलका आने का कोई प्रोग्राम नहीं था । वस्तुपाल ने जाकर संघपति और आचार्य भगवंत को धोलका पधारने के लिए विनंति की ।

वस्तुपाल के अति आग्रह को देखकर संघ के प्रोग्राम में थोड़ा परिवर्तन किया गया- और एक शुभ दिन हजारों पदयात्रिकों के साथ संघ का धोलका नगर की ओर प्रस्थान हुआ । प्रातःकाल में संघ के स्वागत के लिए वस्तुपाल मंत्रीश्वर अपने नगर से निकल पड़े । हजारों यात्रिकों के पैदल चलने के कारण मार्ग में खूब धूल उड़ रही थी, अतः मंत्रीश्वर के सेवक ने वस्तुपाल मंत्रीश्वर को विनंति करते हुए कहा-मंत्रीश्वरजी ! सामने मार्ग में खूब धूल उड़ रही है, अतः कृपया आप दूसरे मार्ग से पधारें ताकि आपके कीमती वस्त्र गंदे न हों ।''

सेवक के मुख से यह बात सुनकर मंत्रीश्वर ने कहा, ``अरे भाई ! तीर्थयात्रिकों के चरणों की धूल तो खूब पूजनीय है, इस धूल के स्पर्श से मेरा शरीर भले ही गंदा हो, परंतु तीर्थयात्रिकों की पवित्र धूल के स्पर्श से तो मेरी आत्मा कर्मरज से मुक्त ही होने वाली है अर्थात् मेरी आत्मा पर लगी कर्म की धूल दूर हो जाएगी ।'

◆ सामान्य व्यक्ति के चरणों की धूल हमें कुछ भी लाभ नहीं करती है, परंतु जिनके दिल में उत्तम भाव रहा हुआ है, उनके चरणों की धूल का स्पर्श भी हमारी आत्मा को लाभ करता है ।
  यात्रिकों के पाद-प्रक्षालन करते हुए जब एक प्रहर से भी अधिक समय बीत जाता है, तब किसी सेवक ने वस्तुपाल को कहा, ``नाश्ते का समय हो गया है, आप पधारो ।''

◆ वस्तुपाल-तेजपाल पालीताणा की यात्रा के लिए जा रहे थे । उनके पास कुछ Extra धन था-उन्होंने सोचा, यात्रा करके आने के बाद यह धन काम लगेगा, इस प्रकार विचार कर वे उस धन को जमीन में गाड़ने के लिए तैयार हो गए ।

धन को गाडने के लिए जैसे ही उन्होंने खड्डा खोदा तो उस जमीन में बहुतसा नया धन मिल गया ।

उन्होंने अनुपमादेवी की सलाह ली । अनुपमादेवी ने कहा– ``इस धन को जमीन में गाडने की आवश्यकता नहीं है । इसे तो पर्वत पर लगाओ, इसे दुनिया देख सके, परंतु कोई लूट न सके ।''

वस्तुपाल कुछ समझ नहीं पाए ।

उन्होंने कहा– ``यह कैसे ?''

अनुपमादेवी ने कहा, ``शत्रुंजय महातीर्थ के मंदिरों का उद्धार कराओ । उसमें धन का सद्व्यय करो-उसे दुनिया देख सकेगी, परंतु कोई लूट नहीं सकेगा ।''

अनुपमादेवी की सलाह से वस्तुपाल-तेजपाल ने शत्रुंजय-आबू के पवित्र तीर्थों के उद्धार में करोड़ों रुपयों का सद्व्यय किया ।

उस जमाने में वस्तुपाल-तेजपाल ने शत्रुंजय तीर्थ के उद्धार में 18 करोड़ और आबू के तीर्थोद्धार में 13 करोड़ से भी अधिक धन का सद्व्यय किया ।

छ'री पालक संघ

दि. 24 नवंबर से उदयपुर से दयालशाह किल्ला छ'री पालक संघ का शुभारंभ हुआ । मरुधर रत्न **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5 प्रभावक प्रवचनकार पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री निरागरत्नविजयजी म.सा.** आदि ठाणा-3 एवं बहनों की आराधना हेतु पधारे **साध्वीश्री अर्हद्रेखाश्रीजी म.सा.** आदि ठाणा-4 की शुभ निश्रा में प्रात: 5.00 बजे मंदिरजी में लघु पाटला पूजन आदि विधिविधान के बाद मंदिरजी के बाहर चढावों के लाभार्थी परिवारों की ओर से सामुहिक छरी पालक संघ के लाभार्थी परिवारों का तिलक, फूलमाला, श्रीफल एवं गन्ना प्रदान करके बहुमान किया । तत्पश्चात् गाजते-बाजते छ'री पालक यात्रा संघ में जुडे लगभग 110 आराधकों का गुरुभगवंतो के साथ मंगल प्रयाण हुआ ।

11 कि.मि. विहार के बाद प्रथम पडाव-आदर्श ढाबा-मोहनपुरा में श्रीसंघ का मंगल प्रवेश हुआ । दोपहर 3.00 बजे पूज्य गुरुभगवंतों का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 25 नवंबर को 11 कि.मी. विहार कर दुसरा पडाव-देलवाडा नगर पहुँचा । प्रात: 8.45 बजे देलवाडा नगर जैन संघ की ओर से सभी का स्वागत किया गया । जंगम तीर्थ स्वरुप श्रीसंघ का स्थावर तीर्थक्षेत्र श्री देलवाडा तीर्थ में मंगल प्रवेश हुआ । प्रवेश यात्रा के पश्चात् श्री शामलिया पार्श्वनाथ 52 जिनालय एवं श्री आदिनाथ प्रभु प्राचीन 52 जिनालय में दर्शन कर सभी का मन भावविभोर हो गया । दोपहर 3.00 बजे पूज्य गुरु भगवंतो का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । शाम कों 5.30 बजे श्री शामलिया पार्स्वनाथ जिनालय में प्रभुजी की भव्य अंगरचना एवं दीपक रोशनी में प्रभु की संध्या भक्ति हुई ।

दि. 26 नवंबर को 10 कि.मी. विहार कर श्रीसंघ तीसरे पडाव मदन विहारधाम-घोटाघाटी पहुँचा । दोपहर 3.00 बजे प्रवचन एवं शाम को 5.30 बजे संध्याभक्ति हुई ।

दि. 27 नवंबर को 12 कि.मी. विहार कर श्रीसंघ चौथे पडाव नाथद्वारा पहुँचा । श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन संघ द्वारा पूज्यश्री एवं सभी संघ यात्रिकों का स्वागत किया गया । दोपहर 3.00 बजे प्रवचन एवं शाम 5.30 बजे संध्या भक्ति हुई ।

दि. 28 नवंबर को 10 कि.मी. विहार कर श्रीसंघ पांचवें पडाव श्री शिवशक्ति काठियावाडी ढाबा पहुँचा । दोपहर 3.00 बजे प्रवचन एवं शाम 5.30 बजे संध्याभक्ति हुई ।

दि. 29 नवंबर को 10 कि.मी. विहार कर श्रीसंघ कांकरोली पहुँचा । प्रात: 8.00 बजे जलचक्की चौराया से कांकरोली-राजनगर जैन संघ द्वारा पधारे हुए पैदल संघ का भव्य स्वागत किया गया । भव्य नगर प्रवेश के बाद दयालशाह किल्ला तीर्थ तलेटी में पूज्यश्री का मांगलिक प्रवचन एवं सकल संघ की नवकारशी हुई । फिर 9.30 बजे दयालशाह किल्ला तीर्थ के दर्शन-चैत्यवंदन के बाद तीर्थ के प्रांगण में सभी संघपतियों की तीर्थ माला की क्रिया हुई । गुरुपूजन का चढावा 41,000 रुपये में **अ.सौ. उषाबेन महावीरजी रांका परिवार** ने लेकर सभी गुरु भगवंतों का गुरुपूजन किया । छ'री पालक संघ यात्रा में जुडे सभी यात्रिकों को 2,000 की प्रभावना हुई ।

छ'री पालक संघ की ओर से दयालशाह किल्ला तीर्थ की भोजनशाला में 2 लाख रुपये, श्री जैन श्वे.मू. संघ-मालदास स्ट्रीट साधारण खाता में 1 लाख रुपये एवं श्री जिरावला पार्श्वनाथ जैन संघ-नवरतन-उदयपुर के साधारण खाता में 1 लाख रुपये भेट दिये गए ।

दि. 30 नवंबर की पूज्यश्री की स्थिरता दयालशाह तीर्थ-तलेटी में रही । आज पूज्यश्री को वंदन करने हेतु **पंजाब के महामहिम राज्यपाल श्री गुलाबचंदजी कटारिया** पधारे । पूज्यश्री के दर्शन कर वे खूब प्रसन्न हुए । 20 मिनिट तक पूज्यश्री से धर्मचर्चा की । पूज्यश्री ने दयालशाह किल्ला तीर्थ के विकास हेतु सहयोग की प्रेरणा की ।

दि. 1 दिसंबर के शुभ दिन मौन एकादशी पर्व होने से ठीक 9.30 बजे पूज्य आचार्य भगवंत एवं मु. श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा. का प्रवचन हुआ ।

दि. 2 दिसंबर को भी पूज्यश्री की स्थिरता दयालशाह किल्ला तीर्थ-तलेटी में रही और प्रवचन हुआ ।

पूज्यश्री का आगामी कार्यक्रम

दि. 23-24-25 दिसंबर—सादडी (राणकपुर) में पूज्य आचार्यश्री के संयम सुवर्णवर्ष में प्रवेश की अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय जिनभक्ति महोत्सव ।

दि. 26-27-28 दिसंबर—घाणेराव में संयम सुवर्णवर्ष अनुमोदनार्थ त्रिदिवसीय जिन भक्ति महोत्सव ।

दि. 30-31 दिसंबर—नीपल में संयम अनुमोदना महोत्सव ।

दि. 6-7-8 जनवरी—बिजोवा में शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय में ध्वजारोहण महोत्सव ।

दि. 27 जनवरी से 31 जनवरी—पूज्य आचार्य भगवंत की जन्मभूमि बाली नगर में 'सर्वविरति सुवर्णवर्ष का भव्य पंचाह्निक महोत्सव ।'

दि. 27 जनवरी—पूज्य आचार्य भगवंत का मंगल प्रवेश एवं श्रुत सन्मान यात्रा ।

दि. 28 जनवरी—गोडवाड क्षेत्र से दीक्षित बने हुए एवं वर्तमान में विद्यमान साधु-साध्वीजी के माता-पिता आदि का सन्मान समारोह ।

दि. 29 जनवरी—वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक ।

दि. 30 जनवरी—मुमुक्षु राजु की भागवती दीक्षा की नाटिका ।

दि. 31 जनवरी—पूज्य आचार्य भगवंत का 50 वर्ष में मंगल-प्रवेश **'वंदे गुरुवरम्'** का अनुठा कार्यक्रम ।

दि. 1 फरवरी—बाली से सेसली तीर्थ की चैत्य परिपाटी ।

उसके बाद मारवाड के विविध संघों में विचरण रहेगा ।

जानकारी हेतु संपर्क सूत्र—सहदेव 98672 04942

छ'री पालक संघ

मंगल तिलक

संघ प्रयाण

देलवाडा प्रवेश

प्रवचन

प्रवचन

नाथ द्वारा प्रवेश

छ'री पालक संघ

नाथद्वारा प्रवचन

दयालशाह किल्ला प्रवेश

तीर्थ प्रवेश

प्रवचन

दयालशाह किल्ला तीर्थ मूलनायक

प्रभु दर्शन

छ'री पालक संघ

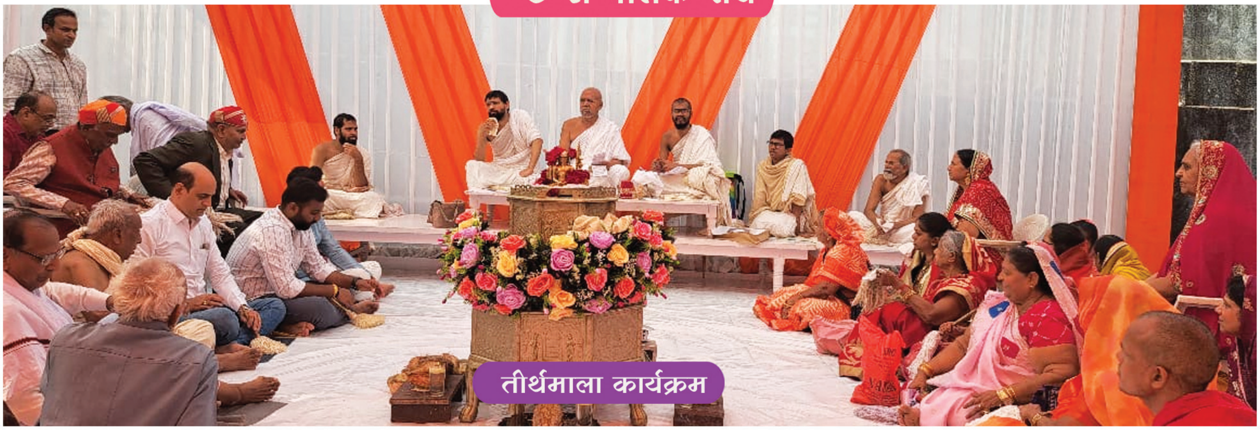

तीर्थमाला कार्यक्रम

तीर्थमाला की क्रिया करते संघपति

गुरुपूजन

तीर्थमाला

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

पूज्यश्री के दर्शनार्थ पधारे पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंदजी कटारिया

हितोपदेश

वार्तालाप

बहुमान

आशीर्वाद

पुस्तक अर्पण

मांगलिक श्रवण

विशेषांक सौजन्य : उदयपुर से दयालशाह तीर्थ छ'री पालक संघ

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

To,

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN